रजिस्ट्री सं० डी० 222

REGISTERED NO. D-222

सत्यमेव जयते

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 1] नई दिल्ली, शनिवार, जनवरी 1, 1966 (पौष 11, 1887)

No. 1] NEW DELHI, SATURDAY, JANUARY 1, 1966 (PAUSA 11, 1887)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 14 दिसम्बर 1965 तक प्रकाशित किए गए थे :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 14th December 1965 :—

अंक (Issue No.)	संख्या औरतारीख (No. and Date)	द्वारा जारी किया गया (Issued by)	विषय (Subject)
182	No. 110/ITC(P)/65, dated 14th December, 1965.	Ministry of Commerce	Submission of Lists of goods for attestation.
183	No. R. S. 1/65-L, dated 14th December, 1965.	Rajya Sabha Secretariat	President prorogues the Rajya Sabha.
	संख्या आर० एस० 1/65-एल०, दिनांक 14 दिसम्बर 1965	राज्य सभा सचिवालय	राष्ट्रपति ने राज्य सभा का सत्रावसान किया ।
184	No. 37/1/XIII/65/T, dated 14th December, 1965.	Lok Sabha Secretariat	President prorogues the Lok Sabha.
	संख्या 37/1/XIII/65/टी०, दिनांक 14 दिसम्बर 1965	लोक-सभा सचिवालय	राष्ट्रपति ने लोक-सभा का सत्रावसान किया ।

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची
(CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	1
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	1
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश, और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्टें	—

	पृष्ठ (Pages)
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं) ..	1
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाये और जारी किये गये आदेश और अधिसूचनाएं	1
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	1
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	1
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्त द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	1
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	1
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	1
पूरक सं० 1—	
25 दिसम्बर 1965 को समाप्त हुए सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट ..	1
4 दिसम्बर 1965 को समाप्त होनेवाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 या उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े ..	11

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence — 1

PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence — 1

PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations —

PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills —

PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) — 1

PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) 1

PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence .. 1

PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India — — — — — —

PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Office, Calcutta .. 1

PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners 1

PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 1

PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies 1

SUPPLEMENT No. 1—

Weekly Epidemiological Reports for week-ending 25th December 1965 1

Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 4th December 1965 .. .. — 11

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 5 सितम्बर 1965

सं० 130-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिया में, प्रदर्शित वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर कीलर (4818), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर 1965)

3 सितम्बर 1965 को सुबह लगभग 7 बजे सूचना मिली कि पाकिस्तानी लड़ाकू विमानों की एक टुकड़ी जम्मू-कश्मीर के छम्ब क्षेत्र में हमारे सैनिक ठिकानों के ऊपर चक्कर काट रही थी, इन आक्रामक विमानों को रोकने के लिए कुछ नैट विमानों को आदेश दिया गया। उस क्षेत्र की ओर जाते हुए स्क्वाड्रन लीडर ट्रेवर कीलर, जो नैट विमानों की एक टुकड़ी के नेता थे, ने दुश्मन के एफ-86 सेबर-जेट विमान देखे और उन्हें हवाई लड़ाई में उलझा लिया। जब हवाई लड़ाई हो रही थी, तभी उसमें पाकिस्तानी एफ-104 लड़ाकू विमान भी आ मिले। शत्रु के विमानों की बड़ी संख्या की ओर ध्यान न देते हुये, स्क्वाड्रन लीडर कीलर ने एक सेबर-जेट विमान का पीछा किया और जबतक शत्रु का विमान जलकर हवा में टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ, तबतक वे उस पर हमला करते रहे। शत्रु की वायुसेना के साथ हुई हवाई लड़ाई में हमारी वायुसेना की यह पहली विजय थी।

इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर कीलर ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

2. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट वीरेन्द्र सिंह पठानिया (5198), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध हुये हाल के संघर्ष में पठानकोट क्षेत्र में हमारी वायु शक्ति को बढ़ाने के लिये भेजे गये नैट विमान चालकों में से फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट वीरेन्द्र सिंह पठानिया भी एक थे। उन्होंने पाकिस्तानी विमानों को खदेड़ने और उनसे लड़ने के लिए कई उड़ाने भरीं। 4 सितम्बर 1965 को ऐसी ही एक उड़ान में उनकी शत्रु के कुछ सेबर-जेट विमानों से मुठभेड़ हुई और तुरन्त ही युद्ध होने लगा। बड़े विश्वास और साहस के साथ उन्होंने सारे समय शत्रु को अपनी कलाबाजियों से परेशान करे रखा और शत्रु के एक सेबर विमान के पीछे जाकर उसे मार गिराया। इस मुठभेड़ में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट वीरेन्द्र सिंह पठानिया ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप धैर्यपूर्ण साहस और दृढ़-संकल्प का परिचय दिया।

दिनांक 10 सितम्बर 1965

सं० 124-प्रेस०/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. कैप्टन चन्दर नारायण सिंह (आई० सी०-12701), 2री बटालियन, गढ़वाल राइफल्स **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 अगस्त 1965)

5 अगस्त 1965 को कैप्टन चन्दर नारायण सिंह को, उन पांच पाकिस्तानी सिपाहियों की खोज करने के लिए तैनात किया गया, जिनके बारे में खबर मिली थी कि वे पुंछ के इलाके में ब्रिगेड हैड-क्वार्टर्स के आस-पास देखे गए थे। लगभग 6,000 फुट की ऊंचाई पर एक इलाके में खोज करते हुए इस गश्ती टुकड़ी को पाकिस्तानी हल्की मशीन गन, मार्टर और ग्रेनेडों की भारी गोलाबारी का मुकाबिला करना पड़ा, जो एक ऊंचे स्थान से की जा रही थी। इस गोलाबारी से हमारा एक जवान मारा गया। शत्रु की भारी गोलाबारी से निर्भीक कैप्टन सिंह ने बगल की स्थिति ली, जहां पर ज्यादा आड़ मौजूद थी। यहां से उन्होंने शत्रु की हल्की मशीनगनों पर गोली चलायी और उन्हें शान्त कर दिया। यह देख कर कि शत्रु संख्या में अधिक है, कैप्टन सिंह ने रात के समय हमला करने का साहसपूर्ण निश्चय किया। अपनी सुरक्षा की बिना परवाह किए, उन्होंने मुट्ठी भर जवानों को लेकर धावा बोला और ग्रेनेडों के भारी संख्या में फटने से तथा मार्टरों से गोलाबारी होने के बावजूद, वह शत्रु की स्थिति के 50 गज़ पास तक पहुंच गए। उन्होंने दूसरा धावा बोला, किन्तु शत्रु की चौकी से 10 गज़ की दूरी पर उनको हल्की मशीनगन की गोली लगी और वे वीरगति को प्राप्त हुए। इस कार्रवाई में शत्रु के छः जवान मारे गए, बहुत से जख्मी हुए और शत्रु काफी तादाद में हथियार, गोला-बारूद तथा उपकरण छोड़ कर भाग गया।

इस सारी कार्रवाई में कैप्टन चन्दर नारायण सिंह ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता एवं बलिदान का प्रदर्शन किया।

2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुरबंस संधा (आई० सी०-2999), 3री बटालियन, महार रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 अगस्त, 1965)

15 अगस्त 1965 को जम्मू व काश्मीर के देवा कैम्प क्षेत्र में, पैदल ब्रिगेड के एक ग्रुप पर अचानक पाकिस्तानी तोपखाने ने भारी और केन्द्रित गोलाबारी शुरू कर दी जिसके फलस्वरूप हमारे ब्रिगेड ग्रुप के कमांडर आहत हुए। लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुरबंस सिंह संधा ने, जोकि महार बटालियन की कमान कर रहे थे, अपनी बटालियन को वहां से निकाल कर मोर्चा संभाला और शत्रु की भारी गोलाबारी के बाजूद, सारा दिन मोर्चा संभाले रहे। मंडियाला पर कब्जा रख कर उन्होंने बिगड़ी स्थिति को संभाल लिया। परिणामतः उन्होंने अपनी बटालियन का साहस और विश्वास के साथ निर्देशन करते हुए शत्रु के कड़े मुकाबिले के बावजूद अगली तीन चौकियों पर फिर अधिकार कर लिया।

पुनः 1 सितम्बर 1965 को जब शत्रु के टैंकों के भारी हमले के कारण उनकी बटालियन का ब्रिगेड से सम्बन्ध कट गया, तो उन्होंने कड़ा मुकाबिला किया और उनकी बटालियन को घेरने तथा खत्म करने के शत्रु के सब प्रयत्नों को विफल कर दिया। इस कार्यवाही के दौरान जो लगभग तीन सप्ताह चली, लेफ्टिनेन्ट कर्नल गुरबंस सिंह संधा ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल, सराहनीय साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

3. मेजर रणजीत सिंह दयाल (आई० सी०-4004), 1ली बटालियन, पैराशूट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—25 अगस्त 1965)

25/26 अगस्त 1965 की रात को मेजर रणजीत सिंह दयाल ने जम्मू व काश्मीर में संक नामक स्थान पर हमला किया जिसे

पाकिस्तानियों की भारी गोलाबारी ने रोक दिया। बड़े धैर्य और साहस से काम लेकर मेजर दयाल ने अपनी कम्पनी को सही सलामत वहां से निकाल लिया और अगली रात को फिर हमला करके संक पर कब्जा कर लिया। बिना हिचकिचाहट उन्होंने शत्रु का पीछा किया और जोश के साथ लड़ते हुए 27 अगस्त 1965 को, 11 बजे सुबह लेडवाली गली पर कब्जा कर लिया। इसके बाद रात भर बहुत कठिन इलाके में से गुजरते हुए, उन्होंने अचानक शत्रु पर आक्रमण किया और 28 अगस्त 1965 को, 11 बजे सुबह हाजी-पीर दर्रे पर कब्जा कर लिया। इन कार्यवाही में एक पाकिस्तानी अधिकारी और ग्यारह जवान कैदी बना लिए गए। अगली सुबह मेजर दयाल ने एक और स्थान पर कब्जा करने के लिए अपनी एक प्लाटून को आगे भेजा। जब उन्होंने देखा कि उनकी गश्ती टुकड़ी शत्रु की भारी गोलाबारी में घिर गई है तो वे तुरन्त दूसरी प्लाटून लेकर उसकी सहायता के लिए आगे बढ़े। शत्रु की मशीनगनों और मार्टरों की गोलाबारी के बावजूद, उन्होंने अपनी दो प्लाटूनों को लेकर इस तेजी से हमला किया कि शत्रु अव्यवस्थित रूप से भाग खड़ा हुआ।

इस समस्त कार्यवाही के मध्य, मेजर रणजीत सिंह दयाल ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल, असाधारण नेतृत्व और साहस का परिचय दिया।

4. विंग कमांडर विलियम मैक्डोनाल्ड गुडमैन (3571)
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

1 सितम्बर से 9 सितम्बर 1965 के बीच, विंग कमांडर विलियम मैक्डोनाल्ड गुडमैन ने शत्रु की भारी हवाई और जमीनी गोलाबारी से निर्भीक, पाकिस्तानी टैंकों और फौजों के जमाव क्षेत्रों की टोह लेने और जमीनी लक्ष्यों पर हमला करने की बहुत-सी उड़ानों का नेतृत्व किया। वह अपनी कमान के अधीन समस्त अफसरों व जवानों के लिए प्रेरणा का श्रोत थे। उनके नेतृत्व में उनकी यूनिट ने फौजी सेवा के लिए बहुत ऊंचे दर्जे की तैयारी और कुशलता बनाए रखी जिसके फलस्वरूप, शत्रु की स्थितियों पर बहुत-से सफल वायु आक्रमण करने में सहायता मिली।

विंग कमांडर विलियम मैक्डोनाल्ड गुडमैन द्वारा प्रदर्शित वीरता और नेतृत्व भारतीय वायुसेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल थी।

5. मेजर भास्कर राय (आई० सी० 8119),
20 लान्सर्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

1 सितम्बर 1965 को पाकिस्तानी फौजों ने छम्ब क्षेत्र में हमारे मोर्चों पर भारी संख्या में टैंकों से महला किया। उस समय मेजर भास्कर राय इस इलाके में आरमर्ड कोर रेजिमेंट की एक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। शत्रु के अत्यधिक और अच्छे टैंकों से डरे बिना, मेजर राय ने अपने टैंकों से साहसपूर्वक और बड़ी होशियारी से काम लिया, शत्रु का आगे बढ़ना रोका और ब्रिगेड को घेरे में लेने की शत्रु की कोशिशों को विफल कर दिया। टैंक से टैंक की लड़ाई में मेजर राय ने शत्रु के 13 टैंकों को नष्ट कर दिया और अनेकों को बेकार कर दिया।

इस समस्त कार्यवाही के मध्य मेजर भास्कर राय ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट वीरता और उच्च स्तर के नेतृत्व का परिचय दिया।

6. विंग कमांडर प्रेम पाल सिंह (3871),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

विंग कमांडर प्रेम पाल सिंह एक लड़ाकू बममार स्क्वाड्रन के कमांडिंग अफसर थे, जिसने बहुत थोड़े समय में ऊंचे दर्जे की सांग्रामिक तत्परता प्राप्त की। 6 सितम्बर से 9 सितम्बर 1965 के दौरान, उन्होंने छः बड़ी हमलावर और सामरिक निकट सहायता कार्रवाइयों में भाग लिया जिनमें सरगोधा हवाई अड्डे के संस्थानों, जब, अकबाल और मरूद के हवाई अड्डों पर टोह-उड़ान करना, पेशावर हवाई अड्डे की सही स्थिति मालूम करना और बहुत-से इलाकों में पाकिस्तानी फौजों तथा बख्तरबन्द सेना के जमाव-क्षेत्रों पर बममारी करना शामिल था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की उपेक्षा करते हुए, शत्रु की भारी हवामार गोलाबारी के बीच, इन बहुत खतरनाक कार्रवाइयों में उन्होंने दुश्मन के इलाकों में दूर-दूर तक बममारी करने और टोह लगाने के लिए अनेकों बार उड़ानों का नेतृत्व किया और अपने लक्ष्यों को साहस, संकल्प और दृढ़ता से पूरा किया।

विंग कमांडर प्रेम पाल सिंह ने भारतीय वायु सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल उच्चतम कर्तव्य-ज्ञान, व्यवसायिक निपुणता और वीरता का परिचय दिया।

सं० 131-प्रेस/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिये 'वीर चक्र' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. 3342155 लांस हवलदार गुरदेव सिंह,
1ली बटालियन, सिख रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—24 अगस्त 1965)

24 अगस्त 1965 को सिख बटालियन की एक कम्पनी कोजम्मू-कश्मीर के टिथवाल क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान पर कब्जा करने का आदेश दिया गया; इसके लिए पहले एक पाकिस्तानी चौकी का सफाया करना आवश्यक था। जब हमारी आगे की प्लाटून शत्रु की चौकी के नजदीक पहुंची तो आमने-सामने की लड़ाई शुरू हुई तभी लांस हवलदार गुरदेव सिंह को अपनी टुकड़ी के साथ तेज धावा बोलने का आदेश हुआ। शत्रु पर धावा बोलते समय एक गोली के टुकड़े से लांस हवलदार गुरदेव सिंह के बाएं हाथ में सख्त चोट आई। अपने घाव के बावजूद वे आगे बढ़ते गए और एक हाथ से ही संगीन का प्रयोग करते रहे और शत्रु पर गोली चलाते रहे। इसके बाद, जब लक्ष्य पर मुख्य हमला शुरू होने लगा तब उन्होंने पीछे हटने से इन्कार कर दिया और गले में पट्टी बांध कर जख्मी हाथ को सहारा दिया और फिर मुख्य हमले में शामिल हो गए। दाएं हाथ से स्टेनगन चलाते हुए और जख्मी बाएं हाथ से हथगोले फेंकते हुए उन्होंने अकेले ही शत्रु के तीन बन्करों का सफाया कर दिया। इसके बाद जीते हुए ठिकानों पर अपनी टुकड़ी की तैनात करके वे रिजर्व प्लाटून में जा मिले जो उस समय शत्रु के इलाके में काफी अन्दर हमला बोल रही थी, और वहां वे बहादुरी से एक बन्कर से दूसरे बन्कर में आते-जाते रहे। उन्होंने वहां से हटने के लिये उस समय तक इन्कार कर दिया जबतक कि उनकी सारी कम्पनी का पुनगर्ठन नहीं हो गया।

शत्रु का सामना करने में लांस हवलदार गुरदेव सिंह की व्यक्तिगत सुरक्षा की उपेक्षा तथा कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन उनके जवानों के लिए महान प्रेरणा की स्रोत था।

2. लैफ्टिनैन्ट कर्नल सम्पूरण सिंह (आई० सी० 8041),
16वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—26 अगस्त 1965)

हाजी पीर दर्रे की ओर बढ़ने के लिए यह आवश्यक था कि हमारी सेना बेदोरी पर कब्जा करती, यह स्थान इस क्षेत्र में बड़ी ऊंचाई पर और सामरिक महत्व का था और यहां दो पाकिस्तानी कम्पनियां हल्की एवं मझौली मशीनगनों के साथ मोर्चा लगाए हुए थीं। इस स्थान तक जाने वाले मार्ग बड़े ऊंचे-नीचे और अत्यन्त दुर्गम थे। इस पर कब्जा करने के 26 और 27 अगस्त 1965 को दो पूर्व प्रयत्न विफल हो चुके थे।

28 अगस्त 1965 को पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन को बेदोरी पर कब्जा करने का आदेश हुआ, जो शत्रु की भारी गोलाबारी में घिर गई। इस कठिन घड़ी में लेफ्टिनेन्ट कर्नल सम्पूरण सिंह, जो बटालियन की कमान कर रहे थे, ने साहस और दृढ़ संकल्प के साथ अपने जवानों का नेतृत्व करते हुए अपने लक्ष्य पर हमला बोल दिया। अपनी जानकी बिल्कुल परवाह किए बिना वे दुश्मन की भारी गोलाबारी के बीच अपने जवानों के साथ आगे बढ़ते गए और अगले दिन सुबह तक बेदोरी पर कब्जा कर लिया।

इस कार्रवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल सम्पूरण सिंह ने भारतीय सेना की परम्परा के अनुरूप ही उच्च स्तर के साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट त्रिलोचन सिंह (5043), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के साथ हुई हाल की लड़ाई में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट त्रिलोचन सिंह, जो एक आपरेशनल स्क्वाड्रन के डिप्टी फ्लाइट कमान्डर थे, ने 14 उड़ानें भरीं। शत्रु द्वारा भूमि से की जा रही भीषण गोलाबारी तथा आकाश में विमान-युद्ध के सम्मुख उन्होंने महान दृढ़-संकल्प और साहसपूर्वक अपना कार्य सम्पन्न किया तथा शत्रु के अनेक छद्मावरण टैंकों एवं भारी तोपों को नष्ट करने में सफल हुए। उन्होंने हमारी जमीन की सेना को हवा में बड़ी प्रभावी सहायता दी और शत्रु की बख्तरबंद गाड़ियों, सैनिकों के मोर्चों और दस्तों पर सफल हवाई आक्रमण किए।

इस कार्यवाही के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट त्रिलोचन सिंह ने उच्च कोटि के साहस, दृढ़-संकल्प और व्यवसायिक योग्यता का परिचय दिया।

4. जे० सी० 13166 सूबेदार मान बहादुर गुरुंग, 3री बटालियन, 8 गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर 1965)

जम्मू-कश्मीर में संजोई चोटी पर शत्रु से मजबूत मोर्चा लगा रखा था और सुरंगे बिछाकर तथा कांटेदार तार लगाकर अपनी स्थिति काफी मजबूत कर रखी थी। इस चोटी पर हमारे हमले में सूबेदार मान बहादुर गुरुंग प्रमुख प्लाटून कमान्डर थे। 3/4 सितम्बर 1965 की रात को जब उनकी प्लाटून शत्रु के ठिकाने के नजदीक पहुंची, तो शत्रु ने भारी और प्रभावशाली गोलाबारी शुरू कर दी। ऐसी स्थिति में शत्रु की मझोली और हल्की मशीनगन और राकेट लांचर के अड्डों को नष्ट किए बिना आगे बढ़ना कठिन था। स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए, सूबेदार गुरुंग एक अन्य टुकड़ी को लेकर बहादुरी और सावधानी से बढ़ते हुए शत्रु के दाहिनी ओर जा पहुंचे और वहां से उन्होंने शत्रु के मजबूत ठिकानों पर चार राकेट छोड़े। तभी अपनी दो टुकड़ियों के साथ उन्होंने शत्रु के अग्रिम ठिकानों पर आक्रमण कर दिया। उन्हें शत्रु के बन्करों के आगे लगभग 6 फुट ऊंची पत्थर की दीवार दिखाई दी और वे तथा उनके कुछ साथी एक पेड़ पर चढ़कर बन्करों की छत पर कूद गए। इसपर शत्रु के सैनिक, जैसे ही अपने ठिकाने छोड़कर भागने लगे, उन्हें ढेर कर दिया गया। जब सूबेदार गुरुंग की प्लाटून आगे बढ़ी तो उनकी दायीं ओर से शत्रु को एक अन्य हल्की मशीनगन ने गोलियां बरसानी शुरु कर दीं। उन्होंने अपनी हल्की मशीनगन टुकड़ी को शत्रु की मशीनगन को उलझाने का आदेश दिया और स्वयं रेंगते हुए उनके ठिकानों के पीछे पहुंच गए। वहां से उन्होंने शत्रु के बन्कर में दो हथगोले फेंके और अपनी स्टेनगन से गोलियां चलाईं। उन्होंने बन्कर के अन्दर अपनी खुखरी से आक्रमण कर दिया तथा शत्रु के तोपचियों के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और इस प्रकार हमारी सेना को आगे बढ़ने का मौका मिला।

इस कार्यवाही में सूबेदार मान बहादुर गुरुंग द्वारा प्रदर्शित महान शौर्य, दृढ़-संकल्प और कर्तव्यपरायणता उनके जवानों के लिए प्रेरणा का एक स्रोत था।

5. 1142832 हवलदार सी० पेरूमल, 27 आरमर्ड रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर 1965)

3 सितम्बर 1965 को अखनूर पुल की रक्षा में तैनात वायु रक्षा दल के एक दस्ते का हवलदार सी० पेरूमल नेतृत्व कर रहे थे, उन्होंने साहस और सूझबूझ के साथ अपनी 40 मझोली मशीनगन से गोले चलाए, जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान का एक सेबर-जैट विमान मार गिराया गया।

6. 5735805 लांस नायक राज बहादुर गुरुंग, 3री बटालियन, 8 गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर 1965)

जम्मू-कश्मीर में 3/4 सितम्बर 1965 की रात को संजोई चोटी पर कब्जा करने के लिए जो कम्पनी भेजी गई, उसकी प्रमुख प्लाटून में लांस नायक राज बहादुर गुरुंग सेक्शन कमान्डर थे। जब प्लाटून लक्ष्य के नजदीक पहुंची, तो शत्रु ने मझोली और हल्की मशीनगनों से गोलियां तथा राकेट बरसाने शुरू कर दिए जिसके फलस्वरूप हमारे तीन सैनिक मारे गए। प्लाटून कमान्डर के आदेश पर लांस नायक गुरुंग अपनी टुकड़ी को शत्रु के बन्करों के दाहिनी ओर ले गए और वहां से शत्रु के मजबूत ठिकानों पर हमला किया। जब उनकी टुकड़ी शत्रु के ठिकानों के नजदीक पहुंची तो उन्हें बन्करों के आगे 6 फुट ऊंची पत्थर की दीवार दिखाई दी। वे एक पेड़ पर चढ़ गए और शत्रु के बन्कर की छत पर कूद गए। इसके बाद उन्होंने तेजी से बन्कर के अन्दर घुस कर शत्रु के तोपचियों को मौत के घाट उतार दिया और उनकी मझोली मशीनगन पर कब्जा कर लिया। इसके बाद उनकी टुकड़ी द्वारा भारी गोलाबारी करने के फलस्वरूप शत्रु अग्रिम मोर्चे छोड़ कर पीछे हटने लगा और तभी लांस नायक गुरुंग ने शत्रु के तीन और सैनिकों को मार डाला। उनकी बहादुरी से प्रेरित हो कर उनके जवानों ने कुछ ही समय में शत्रु के अनेक बन्करों पर कब्जा कर लिया।

इस कार्यवाही में लांस नायक गुरुंग ने भारतीय सेना को उच्च परम्परा के अनुसार साहस, संकल्प और उच्च कोटि के नेतृत्व का परिचय दिया।

7. 1155700 हवलदार पोथाराज, 27 आरमर्ड रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 सितम्बर 1965)

5 सितम्बर 1965 को जम्मू में तवी पुल की रक्षा में वायु रक्षा दल का एक दस्ता तैनात था, जिसका नेतृत्व हवलदार पोथाराज कर रहे थे, उन्होंने साहस एवं सूझबूझ के साथ अपनी 40 मझोली मशीनगन से गोले चलाए जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान का एक सेबर-जेट विमान मार गिराया गया।

8. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट देव नाथ राठौर (5780), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट देव नाथ राठौर के नेतृत्व में दो विमान हलवाड़ा हवाई अड्डे के ऊपर शाम के समय हवाई गश्त लगाने के लिए भेजे गए। इस हवाई अड्डे पर पाकिस्तान के चार सेबर विमानों ने हमला किया और हवाई अड्डे का चक्कर लगाते हुए हमारे दो विमानों के साथ भी उनकी मुठभेड़ हुई। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्णतः उपेक्षा करते हुए फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट राठौर ने विमानों की टुकड़ी के साथ शत्रु के विमानों का मुकाबला किया। जमीन से हमारी सारी गोलाबारी के बीच जाकर उन्होंने शत्रु के एक विमान को, इससे पूर्व कि वह कोई क्षति पहुंचाता मार गिराया।

इस मुठभेड़ में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट देव नाथ राठौर द्वारा प्रदर्शित साहस और नेतृत्व भारतीय वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप था ।

9. फ्लाइंग आफिसर आदि रुस्तमजी गांधी (7722),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 को हमारे दो विमानों की एक टुकड़ी हलवाड़ा पर हवाई गश्त लगा रही थी, जिसमें फ्लाइंग आफिसर आदि रुस्तमजी गांधी दूसरे नम्बर के विमान में थे । उसी समय हमारे दो अन्य विमान भी परस्पर सहायतार्थ हवा में उड़ रहे थे । अचानक ही पाकिस्तान के चार एफ-86 विमान नीचे उड़ते हुए हवाई अड्डे पर हमला करने आ गए और फ्लाइंग आफिसर गांधी की टुकड़ी के पीछे लग गए । शत्रु के एक सेबर विमान ने फ्लाइंग आफिसर गांधी के नेता के विमान को मार गिराया । अचानक घटी इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से अविचलित, फ्लाइंग आफिसर गांधी कुशलतापूर्वक कलाबाजियां खाते हुए अपने विमान को एफ-86 विमान के पीछे ले गए और उसे मार गिराया । इसके बाद उनसे काफी ज्यादा संख्या के शत्रु विमानो ने उन्हें घेरकर उनके विमान को गिरा दिया । शत्रु के सेबर विमान खदेड़ दिए गए, शत्रु का हमला बेकार कर दिया गया, और हमारे हवाई अड्डे के विमानों और जमीन के प्रतिष्ठानों की क्षति होने से बचा लिया गया । इस कार्यवाही में शत्रु का सामना करने में फ्लाइंग आफिसर गांधी ने प्रशंसनीय साहस का परिचय दिया ।

10. फ्लाइंग आफिसर विनोद कुमार नेब (8189),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 को फ्लाइंग आफिसर विनोद कुमार नेब हलवाड़ा हवाई अड्डे पर गश्त लगाने वाले दो वायुयानो में से दूसरे में तैनात थे । हमारे दो अन्य विमान भी वहां गश्त लगा रहे थे । अचानक पाकिस्तान के चार सेबर-जेट विमान काफी निचाई पर उड़ते हुए आ गए और हमारे विमानों तथा हवाई अड्डे पर हमला करने लगे । फ्लाइंग आफिसर नेब यद्यपि अभी ट्रेनिंग पर थे तथा अल्प अनुभवी थे तथापि उन्होंने बहुत विश्वास के साथ शत्रु के विमानों पर हमला किया और एक सेबर विमान को मार गिराया ।

इस मुठभेड़ में, फ्लाइंग आफिसर विनोद कुमार नेब ने सराहनीय साहस और उच्च कोटि की कर्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

11. 3946403 नायक प्रेम सिंह,
3री बटालियन, डोगरा रेजिमेन्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

जम्मू-कश्मीर में पूंछ क्षेत्र में पाकिस्तान की एक चौकी पर कब्जा करने के लिए एक कम्पनी भेजी गई, जिसमें नायक प्रेम सिंह एक प्रमुख सेक्शन कमान्डर थे । एक रात तक मार्च करने के बाद यह कम्पनी शत्रु की मशीनगनों की भारी गोलाबारी के बीच शत्रु की चौकी के सामने पहुंच गयी जहां शत्रु ने तार लगा रखे थे । नायक प्रेम सिंह ने सोचा कि अगले धावे में यदि विलम्ब हुआ तो हमारी ओर भारी संख्या में सैनिक हताहत होंगे, अतः वे तार काटने के लिए आगे बढ़े, ताकि उनकी कम्पनी आगे बढ़ सके । ऐसा करते हुए, उन पर शत्रु की एक गोली लगी, किन्तु घाव लगने के बावजूद उन्होंने अपना काम पूरा कर दिया और अपनी कम्पनी का नेतृत्व करते हुए वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़े जहां काफी खून बह जाने के कारण वे शिथिल हो कर गिर पड़े । उनकी शूरवीरता के कारण उनकी कम्पनी के बहुत-से अन्य सैनिकों की जान बच गई और लक्ष्य पर हमारा कब्जा हो गया ।

इस कार्यवाही में, नायक प्रेम सिंह ने भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप नेतृत्व, साहस और उच्च कोटि के दृढ़ संकल्प का परिचय दिया ।

12. 3341107 नायक चांद सिंह,
2री बटालियन, सिख रेजिमेन्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

जम्मू-कश्मीर में पूंछ क्षेत्र में युद्ध-विराम रेखा के उस पार शत्रु की टुकड़ी किलेबंदी के बीच सुरक्षित राजा चौकी पर जिन दो कम्पनियों ने हमला बोला, उनमें नायक चांद सिंह एक प्रमुख सेक्शन कमान्डर थे ।

6 सितम्बर 1965 को सुबह लगभग 6 बजे जब वे कम्पनियां अपने लक्ष्य से लगभग 50 गज की दूरी पर थीं तब शत्रु की भारी गोलबारी के कारण उनका आगे बढ़ना रुक गया । यद्यपि गोलाबारी बिल्कुल सामने से हो रही थी तथापि नायक चांद सिंह शत्रु की मशीनगन चौकी की ओर बढ़े, उन्होंने बन्करों में हथगोले फेंके और तोपचियों को मार डाला । अराजादिष्ट अफसर के इस साहसपूर्ण कार्य से हमला सफल हुआ और राजा चौकी पर कब्जा हो गया और हमारी ओर ज्यादा लोग हताहत नहीं हुए ।

इस कार्यवाही में नायक चांद सिंह ने भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप साहस, नेतृत्व और उच्च कोटि के संकल्प का परिचय दिया ।

13. स्क्वाड्रन लीडर मधुकर शान्ताराम जटार (4793),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के साथ हुई हाल की लड़ाई में स्क्वाड्रन लीडर मधुकर शान्ताराम जटार उस सामरिक-स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमान्डर थे जिसने 14 उड़ानें भरीं । 7 सितम्बर 1965 को उन्होंने 8 मिस्टीयर विमानों की एक टुकड़ी का नेतृत्व किया, जो भगड़नवाला हवाई अड्डे के सैनिक प्रतिष्ठानों को नष्ट करने के लिए भेजी गई थी । विमानों ने यह हमला काफी नीचे उड़ते हुए किया अबकि वहां कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा था । स्क्वाड्रन लीडर जटार ने अपने साथियों को अपने साहस और दृढ़ता से प्रेरित किया और हवाई अड्डे पर सफलतापूर्वक हमला हुआ । परिणामस्वरूप शत्रु का एक सेबर-जेट विमान नष्ट हो गया और दूसरे को नुकसान पहुंचा । अपना काम सफलतापूर्वक करने के बाद स्क्वाड्रन लीडर जटार अपने आठों विमानों को सुरक्षित वापस ले आए ।

इस कार्यवाही में, स्क्वाड्रन लीडर मधुकर शान्ताराम जटार ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप नेतृत्व, कर्तव्यनिष्ठा और उच्च कोटि की व्यवसायिक कुशलता का परिचय दिया ।

14. स्क्वाड्रन लीडर सुदर्शन हाण्डा (4816),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7 सितम्बर 1965 को सुबह 9-45 बजे स्क्वाड्रन लीडर सुदर्शन हाण्डा के नेतृत्व में 4 मिस्टीयर विमान पाकिस्तानी क्षेत्र में हवाई हमला करने के लिए भेजे गए । ये विमान जमीन से केवल 50 से 100 फुट की ऊंचाई पर उड़ते हुए पाकिस्तानी क्षेत्र में काफी अन्दर तक घुसे ।

स्क्वाड्रन लीडर हाण्डा ने अपनी टुकड़ी को ठीक लक्ष्य की ओर ले जा कर हमला किया । उन्होंने पैट्रोल के एक बड़े भण्डार पर बम गिराए और जमीन पर उड़ने के लिए तैयार खड़े तीन सेबर-जेट विमानों पर गोलियां चलाईं जिनमें से एक जलकर राख हो गया । इसके बाद उन्होंने अपनी टुकड़ी के शेष साथियों को वहीं पर खड़े हुए शत्रु के एक एफ-104 लड़ाकू विमान पर हमला करने का संकेत दिया । इसी बीच हमारे चारों विमानों पर शत्रु की विमानभेदी

तोपों के गोलों की भारी मार हुई। सफल आक्रमण के पश्चात् स्क्वाड्रन लीडर हाण्डा बहुत कम पेट्रोल के साथ चारों विमानों को सुरक्षित अपने अड्डे पर वापस ले आए।

स्क्वाड्रन लीडर हाण्डा ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप साहस, कर्त्तव्यनिष्ठा और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया।

15. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट एलफ्रेड टायरोन कुक (6336), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7 सितम्बर 1965 को जब कलाइकुण्डा हवाई अड्डे पर पाकिस्तान के 6 सेबर-जेट विमानों ने हमला किया, उस समय फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट एलफ्रेड टायरोन कुक के नेतृत्व में हमारे दो विमान हवाई गश्त लगा रहे थे। वे तुरन्त शत्रु के विमानों को रोकने के लिए अपने विमान लेकर पहुंचे। यद्यपि हमारी विमानभेदी तोपों ने गोले चलाने शुरू कर दिए थे तथापि अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे शत्रु के दो विमानों से जा भिड़े। शत्रु के विमानों ने बचने का प्रयत्न किया तथा कलाबाजियां खा कर जवाबी हमला किया लेकिन फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुक ने दृढ़ संकल्प तथा असाधारण कुशलता से शत्रु पर प्रहार किया और शत्रु के एक विमान को मार गिराया जो हवा में टुकड़े-टुकड़े हो गया। इसके बाद उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने विमान को शत्रु के दूसरे विमान के पीछे लगाया लेकिन तब तक उनका गोलाबारूद खत्म हो चुका था। फिर भी, उन्होंने शत्रु का पीछा किया और शत्रु के शेष विमान घबड़ा कर भाग गए।

इस कार्यवाही में, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट एलफ्रेड टायरोन कुक ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप महान साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

16. फ्लाइंग आफिसर सुबोध चन्द्र मामगांई (6760), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान के 6 सेबर-जेट विमानों ने कलाईकुण्डा हवाई अड्डे पर हमला किया। उस समय हवाई लड़ाई के लिए भेजे गए हमारे विमानों की एक कतार में किनारे का विमान फ्लाइंग आफिसर सुबोध चन्द्र मामगांई चला रहे थे। उन्होंने शत्रु के विमानों को रोकने के लिए अपने नेता का अनुकरण किया। यद्यपि शत्रु के विमानों की संख्या काफी ज्यादा थी और उस क्षेत्र में हमारी विमानभेदी तोपें भी गोले चला रही थीं तथापि फ्लाइंग आफिसर मामगांई अपनी जान की बिल्कुल परवाह किए बिना शत्रु के विमानों से जा उलझे। शत्रु के विमानों ने भागने की कोशिश की और काफी निचाई पर कलाबाजियां खाकर जवाबी हमला किया, लेकिन दृढ़-संकल्प और असाधारण कुशलता से फ्लाइंग आफिसर मामगांई ने कलाबाजियां खाकर शत्रु के दो विमानों को नीचा दिखाया और सफलतापूर्वक उनपर जबर्दस्त हमला किया। इसके फलस्वरूप शत्रु का एक विमान जमीन पर आ गिरा और दूसरा जिसे भारी क्षति पहुंची थी, अपने पीछे धुंए के बादल छोड़ता हुआ भागता हुआ दिखाई दिया।

इस मुठभेड़ में फ्लाइंग आफिसर सुबोध चन्द्र मामगांई ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप महान साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

दिनांक 17 सितम्बर 1965

सं० 125-प्रेस/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेन्ट कर्नल डैसमांड हाइड (आ० सी० 4036), 3री बटालियन, जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 को जब पाकिस्तान में इच्छोगिल नहर पर पहला हमला किया गया था, तब जाट रेजिमेंट की एक बटालियन के आफिसर कमांडिंग लेफ्टिनेन्ट कर्नल डैसमांड हाइड ने शत्रु के कड़े मुकाबले के बावजूद, नहर के पश्चिमी किनारे पर कब्जा कर लिया। मुख्य रूप से यह उनके नेतृत्व ही का नतीजा था कि शत्रु की लगातार भारी गोलाबारी और बार-बार किये गए जमीनी और हवाई हमलों के बावजूद उनकी बटालियन न सिर्फ शत्रु से छीने गए मोर्चों पर जमी रही, बल्कि आगे भी बढ़ती रही। 9 सितम्बर 1965 को जब शत्रु ने पैटन और शर्मन टैंकों से आक्रमण किया तो उनकी बटालियन ने रिकायनलैस गनों से शत्रु के पांच टैंकों को तबाह कर दिया।

इस समस्त कार्यवाही के मध्य इस बटालियन द्वारा सम्पन्न किया गया कार्य अति उत्तम था और इसका बहुत बड़ा श्रेय लेफ्टिनेन्ट डैसमांड हाइड द्वारा प्रदर्शित उनके व्यक्तिगत महान साहस एवं नेतृत्व के असाधारण गुणों को है।

2. जे० सी० 18340 सूबेदार अजीत सिंह, 4थी बटालियन, सिख रेजिमेंट (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के बर्की गांव पर हमले के दौरान सूबेदार अजीत सिंह को, 6 सितम्बर 1965 को एक गन को, जो शत्रु पर हमला करने में रुकावट थी, नष्ट करने का काम सौंपा गया था। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए उन्होंने अकेले ही गन पर धावा बोल दिया तथा यद्यपि छाती पर मशीनी मशीन गन की गोलियों की बौछारों से घाव लगे तथापि उन्होंने एक हथगोला उस स्थान के एक सुराख में से फेंक कर उस मोर्चे को नष्ट कर दिया। उसके इस वीरतापूर्ण कार्य से न केवल मशीनगन का खतरा दूर हुआ बल्कि इससे उनके साथी शत्रु की स्थिति को नष्ट करने के लिए उत्साहित हुए। अपने घावों के फलस्वरूप सूबेदार अजीत सिंह वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्य में सूबेदार अजीत सिंह ने सर्वोच्च साहस व उदाहरणीय स्तर की कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

3. लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरबंस लाल मेहता (आई० सी० 4282), 4थी बटालियन, मद्रास रेजिमेंट (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर 1965 को काफी सवेरे लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरबंस लाल मेहता जब एक बटालियन का नेतृत्व करते हुए स्यालकोट क्षेत्र में हमला बोल रहे थे, तब उन्होंने देखा कि उनकी एक कम्पनी पाकिस्तानियों की मशीनगनों, मार्टारों, राइफलों और स्वचालित हथियारों की भारी गोलाबारी के कारण आगे नहीं बढ़ पा रही है। शत्रु ने ईख के खेतों में मोर्चा लगा रखा था और इसलिए उसे देख पाना कठिन था। अपने हमले में विलम्ब होते देख, ले० कर्नल मेहता ने अपनी एक रिजर्व कम्पनी को दुश्मन की मशीनगनों का मुंह बन्द करने के लिए भेजा, लेकिन एक ओर से शत्रु के अदृश्य सैनिकों ने इस कम्पनी का बढ़ाव भी रोक दिया। ले० कर्नल मेहता अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए आगे आए और उन्होंने स्वयं ही धावा बोला। इस आक्रमण में सबसे आगे रहने के कारण उनके जवानों को बड़ी प्रेरणा मिली और उन्होंने अपना धावा और जोरों से बोल दिया जिसके फलस्वरूप दुश्मन की मजबूत किले-बन्दी टूट गई।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेन्ट कर्नल हरबंस लाल मेहता भीषण रूप से आहत होकर वीरगति को प्राप्त हुए। उनका व्यक्तिगत साहस, नेतृत्व और त्याग का अनुकरणीय उदाहरण भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप था।

4. लेफ्टिनेन्ट कर्नल सलीम कालेब (आई० सी० 881), 3री कैवलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

10 सितम्बर 1965 को लेफ्टिनेन्ट कर्नल सलीम कालेब एक रिसाला बटालियन की कमान कर रहे थे जो खेमकरण के नजदीक पाकिस्तानी टैंकों से हो रही टैंकों की लड़ाई में लगी हुई थी। बहुत समय तक दुश्मन की तरफ से भारी गोलाबारी के बावजूद इन्होंने धैर्य और साहसपूर्वक कमान सम्भाली और अपने अफसरों तथा जवानों को दुश्मन का निडरता से मुकाबला करने की प्रेरणा दी। इस कार्रवाई में दुश्मन के 15 पैटन टैंक नष्ट किए गए और 9 बिल्कुल ठीक हालत में कब्जे में लिए गए। यह असाधारण सफलता बहुत कुछ इनके धैर्यपूर्ण साहस, नेतृत्व और दूरदर्शिता का ही परिणाम थी।

सं० 132-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुयी संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए 'वीर चक्र' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेघ सिंह (आई० सी०—5682), गार्डस रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

पश्चिमी कमान मुख्यालय के लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेघ सिंह मेजर के रूप में जम्मू-कश्मीर में एक ब्रिगेड के मुख्यालय में पाकिस्तानी सैनिकों के खिलाफ गुप्त रूप से हमले करने के काम में लगाए गए तथा उन्होंने 1 से 11 सितम्बर 1965 तक की अवधि में शत्रु के क्षेत्र में तीन महत्वपूर्ण हमलों की योजना बनायी और उनका सफलतापूर्वक संचालन भी किया। 2-3 सितम्बर 1965 की रात को उनके सैनिकों ने कोटली-बांदी गोपालपुर सड़क पर क्षेत्र के अन्दर शत्रु की संचार व्यवस्था को भंग कर दिया। 6 सितम्बर 1965 को उनके सैनिकों ने शत्रु की दो महत्वपूर्ण चौकियों, नेजापीर और आरीढोक पर कब्जा कर लिया। पुनः 10 सितम्बर 1965 को उनके सैनिक शत्रु के क्षेत्र में 8 मील अन्दर तक घुस गए और शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने कहूठा में उड़ी से पुंछ तक सीधा सम्पर्क स्थापित कर लिया।

इन सभी कार्यवाहियों में लेफ्टिनेन्ट कर्नल मेघ सिंह ने अपने अनुकरणीय साहस और सूझबूझ से अपने अधीन सैनिकों में विश्वास जागृत किया जिसके कारण शत्रु के खेमों में भ्रान्ति फैल गयी और शत्रु के सैनिक हताहत हुए तथा हमारी ब्रिगेड के स्तर की योजना सफल हुई।

2. सैकंड-लेफ्टिनेन्ट सुरिन्दरपाल सिंह सेखों (आई० सी०—13986), 2री बटालियन, राजपूताना राइफल्स (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 सितम्बर 1965)

5-6 सितम्बर 1965 की रात को भारत-पाकिस्तान सीमा पर, डेरा बाबा नानक के पास, रावी नदी के पुल पर जब 5 गोरखा रेजिमेन्ट की एक बटालियन ने कब्जा किया, तब शत्रु ने हमारे मोर्चों पर तोपों से बहुत ही जबर्दस्त गोलाबारी शुरू की, जिसके फलस्वरूप कुछ जवान घायल हो गए। इस गोलाबारी के दौरान सैकंड लेफ्टिनेन्ट सुरिन्दरपाल सिंह सेखों ने बड़े साहस का परिचय दिया और वह घूम-घूम कर अपनी कम्पनी के घायल जवानों की मदद और मरहम-पट्टी करते रहे। जब वे एक घायल जवान की मरहम-पट्टी कर रहे थे, शत्रु की गोला-बारी में सैकंड लेफ्टिनेन्ट सेखों वीर-गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में, सैकंड लेफ्टिनेन्ट सेखों ने वीरता एवं अपने कर्तव्य के प्रति उदाहरणीय निष्ठा और अपने अधीन जवानों की कुशलता के प्रति पूर्ण जागरूकता प्रदर्शित करके भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं को निभाया।

3. लैफ्टिनेन्ट कर्नल छज्जू राम (आई० सी०—1351), आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 की सुबह, पाकिस्तान के डेरा बाबा नानक इलाके में हमारी सेनाओं के लगातार बढ़ने से पुल पर शत्रु का मोर्चा नष्ट हो गया। शत्रु कुछ जानी नुकसान उठाने के बाद पुल को उड़ाए बिना पीछे हट गया। हमारी सेनाओं ने पुल के दक्षिणी किनारे पर कब्जा कर लिया। दोपहर को शत्रु ने टैंकों और तोपखाने की बहुत भारी और प्रभावशाली गोलाबारी की आड़ लेकर पुल पर जबाबी हमला किया और हमारी अगली दो कम्पनियों को रौंद कर आगे बढ़ आया। शत्रु पुल पर से मीडियम टैंकों की एक टुकड़ी भी ले आया और आगे बढ़ने लगा। बड़ी गम्भीर स्थिति पैदा हो गई और तब लेफ्टिनेन्ट कर्नल छज्जू राम को, जो हैडक्वार्टर 11 कोर में जी० एस० ओ० 1 (आप्स) थे, इस स्थिति का मुकाबिला करने का काम सौंपा गया। इलाके में पहुंच कर उन्होंने अपने दृढ़-निश्चय और जोश से तुरन्त अपने जवानों में आत्मविश्वास पैदा किया। उन्होंने झटपट योजना बना कर, अपने दृढ़ व्यवहार और लड़ाई में अपने नेतृत्व से सभी जवानों में जान डाल दी और जवान साहस और बहादुरी से उनके आदेशों का पालन करने लगे। शत्रु पर रात को हमला किया गया, जिसके फलस्वरूप शत्रु की सेना घबरा कर भाग खड़ी हुई और भागते हुए रावी पुल का कुछ हिस्सा नष्ट कर गई, ताकि पुल सही सलामत हमारे हाथ न लगे। शत्रु अपने पीछे भारी मात्रा में गोलाबारूद, उपस्कर एवं चार मीडियम टैंक छोड़ गया। शत्रु के बहुत-से आदमी कैदी भी बना लिये गये।

इस अपूर्व सफलता का अधिकांश श्रेय लेफ्टिनेन्ट कर्नल छज्जू राम के नेतृत्व को है। अपने शान्त साहस और संकल्प से उन्होंने अपने जवानों को इकट्ठा किया और उनसे प्रभावशाली काम लेकर विजय प्राप्त की।

4. कैप्टेन रमेश चन्द्र बक्शी (आई० सी०—12831), 6ठी बटालियन, 8 गोरखा राइफल्स (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर 1965 को कैप्टेन रमेश चन्द्र बक्शी को, जो एक गोरखा रेजिमेंट की एक बटालियन के कम्पनी कमांडर थे, पाकिस्तान के लाहौर क्षेत्र की सीमा पर एक चौकी को प्रातः चार बजे तक कब्जे में लेने का आदेश दिया गया। वह प्रातः तीन बजकर पचपन मिनट पर अपनी कम्पनी को चौकी के सामने चोरी-छिपे घुसालाने में सफल हो गए और उन्होंने शत्रु पर भीषण हमला किया। शत्रु की चौकी के लोग भी सावधान हो चुके थे और उन्हें कुमुक पहुंच गई थी, लेकिन उस चौकी पर, आमने-सामने की घमासान लड़ाई के बाद कब्जा कर लिया गया और इस कार्रवाई में कैप्टन बक्शी ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

इस कार्रवाई में, उन्होंने अपनी कंपनी में आगे रह कर भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल निडर साहस, वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

5. लेफ्टिनेन्ट तेजा सिंह (आई० सी०—13651), 9वीं बटालियन, जम्मू तथा काश्मीर राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

लेफ्टिनेन्ट तेजा सिंह, जो अपनी बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, 6 और 7 सितम्बर 1965 को शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी और हवाई बम्बारी के बावजूद भारत-पाकिस्तान सीमा पर खेमकरन में अपने मोर्चों पर बराबर डटे रहे और शत्रु का हमला न होने दिया। उनकी कम्पनी का गोलाबारूद और पानी समाप्त हो गया। बटालियन हैडक्वार्टर से संचार-व्यवस्था न होने के कारण, वह स्वयं शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच से गजरते हुए अपने हैडक्वार्टर गए और योजना के अनुसार अपने

जवानों को सुरक्षित रूप से पीछे ले आए। इस कार्रवाई में, उन्होंने साहस और उच्चस्तर के नेतृत्व का परिचय दिया।

6. 6263784 लांस हवलदार के० जी० जार्ज, सिगनल कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर से लेकर 10 सितम्बर 1965 के दौरान, शत्रु की लगातार गोलाबारी और हवाई जहाजों की बौछार-मार के बीच, लांस हवलदार के० जी० जार्ज अपने सेक्शन को ले जाकर, पाकिस्तान के वागाह क्षेत्र में, अपनी टूटी हुई संचार-व्यवस्था को ठीक करते रहे। 8/9 दिसम्बर 1965 की रात को, अपनी जान की परवाह किए बिना उन्होंने, शत्रु के एक हमले के दौरान, अपने ब्रिगेड हैड-क्वार्टर और अगली बटालियन के बीच संचार-लाइन कायम की। ऐसा करके, लांस हवलदार जार्ज ने साहस और उच्च स्तर की कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

7. 2851209 राइफलमैन माथन सिंह, 2री बटालियन, राजपूताना राइफल्स (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6/7 सितम्बर 1965 की रात को, भारत-पाकिस्तान सीमा पर डेरा बाबा नानक के पास रावी नदी के पुल पर शत्रु पर जवाबी हमले के दौरान, राइफलमैन माथन सिंह राजपूताना राइफल्स की एक कंपनी के एक सेक्शन में हल्की मशीनगन यूनिट का नेतृत्व कर रहे थे। बटालियन द्वारा लक्ष्य पूर्ति के बाद जिस भाग पर राइफलमैन माथन सिंह के सैक्शन का अधिकार था, उस पर शत्रु ने जबर्दस्त जवाबी हमला किया। राइफलमैन माथन सिंह ने उस हमले का डट कर मुकाबिला किया और शत्रु को दूर ही रखा। बुरी तरह घायल होने पर भी उस ने अपनी बन्दूक नहीं छोड़ी। जब शत्रु-सेना ने पुनः हमला किया, तो राइफलमैन माथन सिंह ने उनको आगे बढ़ने से रोक दिया। इसी बीच उस लक्ष्य पर हमारी सेनाओं की स्थिति दृढ़ हो चुकी थी। जब शत्रु-सेना ने इस पर अधिकार करने के लिये और प्रयास करना छोड़ दिया, तो राइफलमैन माथन सिंह को मृत पाया गया, लेकिन बन्दूक तब भी उसके कंधे पर थी।

राइफलमैन माथन सिंह के सर्वोच्च बलिदान से ही उसकी कंपनी प्राप्त लक्ष्य को बनाए रखने में समर्थ हुई। इस कार्यवाही में उसने बहुत उच्चतम स्तर की वीरता का प्रदर्शन किया जो भारतीय सेना की सर्वश्रेष्ठ परम्परा रही है।

8. जे० सी० 3310 सूबेदार सी० ए० माधवन नम्बियार, 4थी बटालियन, मद्रास रेजिमेंट (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7/8 सितम्बर, 1965 की रात को स्यालकोट क्षेत्र में जब शत्रु की टुकड़ी पर हमारी एक बटालियन ने आक्रमण किया तो सूबेदार सी० ए० माधवन नम्बियार, सिगनल प्लाटून की कमान कर रहे थे। बटालियन की सिगनल व्यवस्था को बनाये रखते हुए सूबेदार माधवन नम्बियार ने देखा कि हमारी अगली कम्पनियां शत्रु की मशीनी मशीनगन और रिकायललैस गनों की गोलाबारी के कारण रूक गई थी। यद्यपि सूबेदार माधवन नम्बियार किसी राइफल कम्पनी की कमान में नहीं थे, फिर भी उन्होंने सिगनल प्लाटून के एक भाग को एकत्रित किया और मशीनी मशीनगन स्थिति पर हमला बोल दिया। इस कार्रवाई में सूबेदार माधवन नम्बियार वीरगति को प्राप्त हुए, परन्तु उनके इस बहादुरी के कारनामे ने हमारी कम्पनी को पुनः शत्रु पर प्रहार करने के योग्य बना दिया।

सूबेदार सी० ए० माधवन नम्बियार ने महान साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल था।

9. जे० सी० 5234 रिसालदार अछर सिंह, दक्कन हार्स (9वीं हार्स)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7 सितम्बर 1965 को जब दक्कन हार्स ने भारत-पाकिस्तान सीमा पर खेमकरन के निकट रोही कांध पर हमले में भाग लिया, तो रिसालदार अछर सिंह ने अपनी टुकड़ी से चतुराई और साहस पूर्वक काम लिया तथा शत्रु का एक टैंक तबाह कर दिया और दूसरे को नुकसान पहुंचाया। उसके उदाहरण से उसके साथियों को प्रेरणा मिली और इस कार्यवाही में बहुत सफलता मिली।

10. 1155809 हवलदार अथनिकल बसिल जेसूदसन, आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

वायुरक्षा रेजिमेंट के हवलदार अथनिकल बसिल जेसूदसन 40 मशीनी मशीनगन दस्ते के नेता थे, जो अमृतसर में वायुसेना के एक महत्वपूर्ण प्रतिष्ठान की रक्षा के लिए तैनात किया गया था। 7 सतम्बर 1965 को सुबह 9—10 बजे जब उनकी तोप पर पाकिस्तान के एफ०-104 स्टार फाइटर और एफ-86 सेबर-जेट विमानों ने एक हवाई हमले में गोलियां बरसाईं, तो हवलदार जेसूदसन ने बड़ी कुशलता से अपनी तोप से विमानों पर निशाना लगाकर गोले चलाए। इसके फलस्वरूप शत्रु का एक सेबर-जेट विमान नष्ट हो गया और हमारी वायुसेना का प्रतिष्ठान बच गया।

इस कार्यवाही में हवलदार अथनिकल बसिल जेसूदसन ने शान्त साहस और प्रत्युत्पन्नमति का परिचय दिया।

11. 9065621 हवलदार फिदू राम, आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7/8 सितम्बर, 1965 की रात्रि को सिगनल टुकड़ी के कार्य-भारी हवलदार फिदू राम स्यालकोट क्षेत्र में अग्रिम प्रेक्षक दल में थे। जब शत्रु के एक शक्तिशाली लक्ष्य पर गोलाबारी करना आवश्यक हो गया तो उस समय वायरलैस सैट, शत्रु के हस्तक्षेप तथा गड़बड़ पैदा करने के कारण बेकार पाया गया। यद्यपि शत्रु चारों ओर से गोलाबारी कर रहा था फिर भी हवलदार फिदू राम, अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए वायरलैस संचार-व्यवस्था को बनाए रखने में डटा रहा। इस प्रकार उसने प्रशंसनीय साहस और योग्यता का परिचय दिया।

12. 1419977 नायक गणेश दत्त, 9वीं बटालियन, कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7/8 सितम्बर 1965 की रात्रि को स्यालकोट क्षेत्र में शत्रु के ठिकानों पर आक्रमण के दौरान जब नायक गणेश दत्त एक सैक्शन का संचालन कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि शत्रु हल्की मशीनगन से उनके सैक्शन को क्षति पहुंचा रहा है और उसको आगे बढ़ने से रोक रहा है। अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए वह रेंग कर शत्रु की खाई तक पहुंच गए और शत्रु की हल्की मशीनगन को शांत कर दिया। इस कार्यवाही में उन्होंने प्रशंसनीय साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

13. 2853735 राइफलमन महीलाल सिंह, 4थी बटालियन, राजपूताना राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

राइफलमैन महीलाल सिंह 7/8 सितम्बर 1965 को स्यालकोट क्षेत्र में बरवा गांव में एक पाकिस्तानी ठिकाने पर धावा बोलने के लिए तैनात एक हल्की मशीनगन टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। दायीं दिशा से पाकिस्तान की मशीनी मशीनगनों की भारी गोलाबारी के कारण कुछ देर के लिए हमला हमारा रुक गया। अपनी व्यक्तिगत

सुरक्षा की परवाह किये बिना राइफलमैन महीलाल सिंह शत्रु की मशीनगन की ओर बढ़े, उस पर गोले दागे और उसे शांत कर दिया। तत्काल शत्रु की दूसरी मझौली मशीनगन ने गोलाबारी शुरू कर दी। राइफलमैन महीलाल सिंह रेंगकर आगे बढ़े और उन्होंने शत्रु की चौकी में हथगोले फेंककर उसे शान्त कर दिया। राइफलमैन महीलाल सिंह के साहस और कर्त्तव्यपरायणता से उनके साथी जवानों को बड़ी प्रेरणा मिली और यह धावा सफल हुआ।

14. मेजर मोहम्मद अली राज़ शेख (आई० सी०–6850), 16वीं लाईट कैवलरी (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर, 1965 को मेजर मोहम्मद अली राज़ शेख को, जो पाकिस्तान में स्यालकोट क्षेत्र में एक बख्तरबंद ब्रिगेड की स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे, गदगोर के पूर्व में शत्रु की सेना को घेर लेने का आदेश दिया गया जिससे शेष सेना से उसका सम्पर्क टूट जाय। रेजिमेंट की एक और स्क्वाड्रन, जो गदगोर तक आगे बढ़ रही थी, की शत्रु की बख्तरबंद और पैदल स्क्वाड्रन से, जो अच्छी प्रकार तैयार और छिपी स्थिति में थी, मुठभेड़ हुई। मेजर शेख 3000 गज़ बढ़े ही थे कि उन्हें शत्रु की बख्तरबंद फौजों का सामना करना पड़ा जिनके साथ जमीन के अंदर छिपी हुई रिकायललैस गनें भी थीं। उन्होंने तुरंत अपनी स्क्वाड्रन को मोर्चेबंदी का आदेश दिया और वह स्वयं आगे बढ़ने वाली टुकड़ी के साथ हो गये। टैंकों की घमासान लड़ाई हुई जिसमें मेजर शेख ने स्वयं बड़ा हिस्सा लिया और शत्रु के दो टैंकों को नष्ट कर दिया, जब अचानक उन्हें शत्रु की एक गोली लगी तो वह बुरी तरह घायल हो गये। इतने पर भी, वह शत्रु से उस समय तक जूझते रहे जबतक कि उन्हें अस्पताल में नहीं ले जाया गया और वहां जाकर घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

मेजर मोहम्मद अली राज़ शेख द्वारा प्रदर्शित अनुकरणीय साहस और नेतृत्व भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप था।

15. मेजर जितिन्दर कुमार (आई० सी०–8519), 15वीं बटालियन, डोगरा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

मेजर जितिन्दर कुमार 8 सितम्बर 1965 को जब उनकी कम्पनी पर शत्रु के वायुयान ने आक्रमण किया तो पाकिस्तान के लाहौर सैक्टर में डोगरा बटालियन का एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की तनिक भी परवाह किये बिना मेजर जितिन्दर कुमार ने एक हल्की मशीनगन संभाली और वे शत्रु के एक सेबरजेट पर, जो कि सीधी उड़ान कर रहा था, तब तक गोलियां चलाते रहे जब तक कि उसे गिरा न दिया।

इस मुठभेड़ में मेजर जितिन्दर कुमार ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया।

16. सैकंड लेफ्टिनेन्ट हर इकबाल सिंह धालीवाल, (ई० सी० 55672), पूना हार्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर, 1965 को सैकंड लेफ्टिनेन्ट हर इकबाल सिंह धालीवाल पाकिस्तान में स्यालकोट क्षेत्र में पूना हार्स की अगली स्क्वाड्रन के अपने सैनिकों का आगे बढ़ते हुए नेतृत्व कर रहे थे। फिलौरा चौराहे के उत्तर में शत्रु के पांच पैटन टैंकों से उनका पहला मुकाबला हुआ। जब उन्होंने अपने सैनिकों को मोर्चा लगाने का आदेश दिया, तभी उनके टैंक पर एक गोला आकर गिरा और उसे आग लग गई। जलते हुए टैंक को छोड़ कर वह तथा उनका चालक एक गड्ढे में नीचे उतर आये। ड्राइवर जलते हुए टैंक के पास गिरा था और सख्त घायल हो चुका था। संकट के बावजूद सैकंड लेफ्टिनेन्ट धालीवाल शत्रु की सीधी गोलाबारी के बीच आगे भागे, ड्राइवर को उठाया तथा अपने टैंक के अन्य सैनिकों को साथ लेकर अपनी स्क्वाड्रन के पिछले ठिकाने पर आ गए। इस कार्यवाही में सैकंड लेफ्टिनेन्ट हर इकबाल सिंह धालीवाल ने असाधारण साहस और प्रत्युत्पन्नमति का परिचय दिया और वे अपने अधीन सभी सैनिकों के लिये प्रेरणा का एक स्रोत थे।

17. सैकंड लेफ्टिनेन्ट भूपिन्दर कुमार वैद्य (ई० सी० 55428), आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर 1965 को सैकंड लेफ्टिनेन्ट भूपिन्दर कुमार वैद्य स्यालकोट क्षेत्र में एक रेजिमेंट के साथ निरीक्षण चौकी अधिकारी का काम कर रहे थे। निरीक्षण चौकी का टैंक रेजिमेंटल की अन्य टुकड़ियों के साथ बढ़ रहा था, तभी टैंकों की घमासान लड़ाई शुरू हो गई। सैकंड लेफ्टिनेन्ट वैद्य के टैंक पर सीधा एक गोला गिरा जिसके फलस्वरूप वह घायल हो गये तथा उनका टेक्नीकल सहायक मारा गया। गतिरोध उत्पन्न होने पर भी सैकंड लेफ्टिनेन्ट वैद्य अपने तोपखाने को उस समय तक मदद देते रहे, जब तक कि उनके टैंक को एक और गोला न लगा और इससे संचार उपकरण टूट गए। अपने घावों की परवाह न करते हुए वह टैंक से उतरकर लगभग 300 गज तक रेंग कर गए और समीप के दूसरे टैंक पर चढ़ गए और वहां से वह शत्रु के अनेक ठिकानों पर गोले चलाते रहे, जिससे शत्रु के बहुत-से सैनिक हताहत हुए और इस प्रकार हमारे सैनिक शेष भाग की कार्रवाई के लिए फिर से इकट्ठे हो गए। सैकंड लेफ्टिनेन्ट वैद्य द्वारा प्रदर्शित उच्चकोटि का साहस और कर्त्तव्यपरायणता भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप थी।

18. मेजर सुरेश चन्द्र वडेरा (आई० सी० 4776), 3री रिसाला रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

मेजर सुरेश चन्द्र वडेरा, स्क्वाड्रन कमांडर 3री रिसाला ने 10 सितम्बर 1965 को खेमकरण के समीप पाकिस्तानी टैंकों के साथ युद्ध में बड़ी सूझ-बूझ और साहस के साथ अपनी स्क्वाड्रन का संचालन किया, परिणामस्वरूप शत्रु के 9 पैटन टैंक अच्छी हालत में हमारे अधिकार में आए और अनेकों नष्ट कर दिए गए। उन्होंने उच्च स्तर के निजी साहस और नेतृत्व का परिचय दिया जिससे शत्रु पूर्णतः हतोत्साहित हो गया।

19. जे० सी० 2807 नायब रिसालदार जगदीश सिंह, सेन्ट्रल इंडिया हार्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

नायब रिसालदार जगदीश सिंह सेन्ट्रल इंडिया हार्स के उस एक स्क्वाड्रन के एक प्रमुख ट्रूप का नेतृत्व कर रहे थे, जिसने एक पैदल बटालियन की सहायता से 10 सितम्बर 1965 को लाहौर क्षेत्र में बर्की गांव पर आक्रमण किया। जैसे ही नायब रिसालदार जगदीश सिंह का टैंक गांव में पहुंचा, वह सुरंग से खराब हो गया। निडर रहकर उन्होंने बर्की पुल पर शत्रु की सेना पर सफलतापूर्वक सही व भारी गोलाबारी की और हमारी पैदल बटालियन को अपना काम पूरा करने और लक्ष्य पर तत्परता से कब्जा करने में बड़ी मदद दी। 6 सितम्बर 1965 के बाद की सभी लड़ाइयों में नायब रिसालदार जगदीश सिंह हमेशा सबसे आगे रहे और इस प्रकार उन्होंने अपने जवानों के सामने एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया और वे उनके साहस से प्रेरित हुये।

20. 3339173 नायब सूबेदार अजमेर सिंह, 4थीं बटालियन, सिक्ख रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान में बर्की गांव में आक्रमण के समय नायब सूबेदार (तब हवलदार) अजमेर सिंह ने शत्रु की

मशीनगनों को लगातार गोलाबारी से अपनी प्लाटून को घिरा हुआ पाया। अपनी प्रत्युत्पन्नमति से वह शत्रु के बंकर की ओर रेंगते हुए आगे बढ़े और यद्यपि एक गोला फटने से वह जख्मी हो गये थे तथापि वह आगे बढ़ते रहे। उनके इस निजी आदर्श से उत्साहित होकर उनकी प्लाटून भी आगे बढ़ी और उसने शत्रु के मोर्चे को पूरी तरह नष्ट कर दिया।

इस कार्रवाई में नायब सूबेदार अजमेर सिंह ने जिस नेतृत्व और साहस का प्रदर्शन किया वह भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल था।

21. 3348906 लांस नायक प्रीतम सिंह,
4थी बटालियन, सिख रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

10-11 सितम्बर 1965 की रात को मुट्ठी भर जवानों के सैक्शन का नेतृत्व करते हुए लांस नायक प्रीतम सिंह ने शत्रु के बर्की गांव में एक पाकिस्तानी मशीनगन चौकी का सफाया किया। उन्होंने शत्रु के गनर को मार दिया तथा उसके बाद होने वाली मुठभेड़ में उन्होंने चौकी के बाकी दो आदमियों को भी संगीन से मार दिया। ऐसा करते हुए वह बुरी तरह जख्मी हो गए। अपने घावों की परवाह किए बिना, उन्होंने शत्रु के अगले बंकर पर हमला किया, जहां पर वह गिरकर वीरगति को प्राप्त हुए।

इस कार्रवाई में, लांस नायक प्रीतम सिंह ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल, महान साहस, नेतृत्व और कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

22. 2452001 सिपाही बालम राम,
16वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

10 सितम्बर 1965 को पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन को पाकिस्तान के लाहौर क्षेत्र में शत्रु के एक ऐसे मोर्चे पर कब्जा करने का हुक्म दिया गया, जिसके बचाव का भारी बंदोबस्त था, और जहां कंक्रीट के बहुत-से पिलबाक्स थे। जब सिपाही बालम राम की प्लाटून आक्रमण के लिए सरंचना कर ही रही थी कि उसपर शत्रु के एक मोर्चे से राइफलों और स्वाचालित हथियारों का भारी और सधा हुआ फायर आने लगा। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किये बिना सिपाही बालम राम ने भारी फायर के बीच से आगे बढ़ कर, कूल्हे पर से फायर करते हुए, शत्रु के शस्त्र भण्डार पर हमला बोल दिया। पिलबाक्स के पास पहुंच कर सिपाही बालम राम की सहायता से उसके नं० 1 ने उसने एक हथगोला फेंका और फिर उन्होंने कंक्रीट के इस बंकर में घुस कर शत्रु के सारे आदमियों को मार कर, एक हल्की मशीनगन, एक स्वाचालित राइफल और एक स्टेनगन कब्जे में ले ली। सिपाही बालम राम का यह शौर्यपूर्ण कार्य उनकी प्लाटून के लिए महान प्रेरणा का एक स्रोत था जिससे उन्होंने शीघ्र ही शत्रु के मोर्चे पर अधिकार कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया।

दिनांक 22 सितम्बर 1965

सं० 126-प्रेस/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महावीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. स्क्वाड्रन लीडर पद्मनाभा गौतम (4482),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

स्क्वाड्रन लीडर पद्मनाभा गौतम, कमांडिंग अफसर बाम्बर कनवरजन ट्रेनिंग यूनिट ने थोड़े समय पहले सूचना मिलने पर भी, बड़ी कुशलता से अपनी यूनिट को लड़ाई में कार्रवाई करने योग्य बना लिया और बहुत-सी कठिन तथा खतरनाक उड़ानों में उसका नेतृत्व किया। उन्होंने 6 सितम्बर से 21 सितम्बर 1965 के बीच, पाकिस्तानी इलाके पर छः महत्वपूर्ण हमलावर तथा सामरिक निकट सहायता कार्रवाइयों का संचालन किया।

अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की पूर्ण रूप से उपेक्षा करते हुए, शत्रु की भारी जमीनी गोलाबारी और पाकिस्तानी सेबर जेटों द्वारा आक्रमण के खतरे के बावजूद, स्क्वाड्रन लीडर गौतम ने साहस और संकल्प से, सौंपे गये कार्यों को सफलता से पूरा किया। इनमें शत्रु के इलाके में दूर तक टोह-उड़ान करने और अकवाल तथा गुजरात के हवाई अड्डों और गुजरात और चाविंडा इलाकों में शत्रु की सेनाओं के जमाव-क्षेत्रों पर बमबारी करने के कार्य शामिल थे।

इन सब कार्रवाइयों के दौरान, स्क्वाड्रन लीडर पद्मनाभा गौतम द्वारा प्रदर्शित कर्तव्य के प्रति निष्ठा, व्यावसायिक निपुणता और शूरवीरता भारतीय वायुसेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल थी।

सं० 133-प्रेस/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए 'वीर चक्र' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हमीर सिंह मंगत (5226),
जनरल ड्यूटीज (नेवीगेटर)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

हाल में पाकिस्तान के साथ हुए संघर्ष में एक आपरेशनल बमवर्षक स्क्वाड्रन के नेवीगेटर फ्लाइट लेफ्टिनेंट हमीर सिंह मंगत ने शत्रु के इलाके के काफी अन्दर बड़े खतरनाक हमलों और स्थल सेना की मदद के लिए सामरिक महत्व की बमबारी के लिए भेजे गए अनेक विमानों को सही निशाने पर बम गिराने के काम में दिन रात सफलतापूर्वक मार्ग निर्देशन किया। शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद अपनी जान की परवाह किए बिना वह बड़े साहस और संकल्प के साथ अपने काम पर डटे रहे और हमारे विमानों को महत्वपूर्ण बमबारी में सही निशानों और लक्ष्यों का ज्ञान कराया।

इस सारी कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेंट हमीर सिंह मंगत ने साहस और उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

2. विंग कमांडर भरत सिंह (3582),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 सितम्बर 1965)

14 सितम्बर 1965 को विंग कमांडर भरत सिंह खेमकरण क्षेत्र में बमबारी के लिए भेजे गए कैनबरा विमानों की मदद करनेवाले चार नैट विमानों के एक सैक्शन का नेतृत्व कर रहे थे। रास्ते में इन नैट विमानों की शत्रु के चार सेबर-जेट विमानों से मुठभेड़ हुई। होने वाले युद्ध के मध्य विंग कमान्डर सिंह ने देखा कि शत्रु का नेता गोलियां चलाते हुए हमारे एक बमवर्षक विमान की ओर बढ़ा। चेतावनी देने के पश्चात् विंग कमान्डर भरत सिंह शत्रु के सेबर-जेट से जा भिड़े। विमानों की इस लड़ाई में उन्होंने अपनी कुशलता और कलाबाजियों से शत्रु के विमान को नीचा दिखाया और अन्त में उसे मार गिराया। इसी बीच शत्रु के अन्य तीन विमान हौसला खोकर जान बचाने के लिए भाग गए। अपनी बहादुरी से विंग कमान्डर सिंह ने न केवल हमारे विमान और चालकों की रक्षा की, बल्कि दुश्मन द्वारा हमारे बमवर्षकों पर किए गए गम्भीर आक्रमण को भी असफल कर दिया।

इस कार्यवाही में विंग कमान्डर भरत सिंह ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप असाधारण व्यावसायिक कौशल और वीरता का प्रदर्शन किया।

3. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रकाश पिंगले (6755),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 सितम्बर 1965)

16 सितम्बर 1965 को फ्लाइंग अफसर प्रकाश पिंगले के नेतृत्व में दो विमान शत्रु के विमानों को खदेड़ने के लिए भेजे गए। उनके विमानों ने पाकिस्तान के एक एफ०-86 विमान को घेरा जो विमान स्वयं अपने राडार नियंत्रण में भी था। बड़ी कुशलता-पूर्वक फ्लाइंग आफिसर पिंगले अपने विमानों को शत्रु के विमान के पीछे ले गए, जहां उन्हें एक अन्य सेबर जेट विमान हमला करने के लिए जाता हुआ दिखाई दिया। उन्होंने तुरन्त अपना रुख पल्टा और पहले विमान को मार गिराया। इसके बाद वे पलट कर शत्रु के दूसरे विमान पर टूटे और बड़ी कुशलता से उड़ान भरते हुए उन्होंने शत्रु के दूसरे विमान को भी धराशायी कर दिया।

इस वायु युद्ध में फ्लाइंग आफिसर पिंगले द्वारा प्रदर्शित कौशल और नेतृत्व भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

4. स्क्वाड्रन लीडर अमरजीत सिंह संधू (4075),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 सितम्बर 1965)

स्क्वाड्रन लीडर अमरजीत सिंह संधू उस स्क्वाड्रन में फ्लाइट कमान्डर थे, जिसे पाकिस्तान के साथ हुए हाल के संघर्ष में पठानकोट क्षेत्र की हवाई रक्षा का काम सौंपा गया था। उन्होंने छम्ब क्षेत्र में और पसरूर तथा लाहौर इलाकों के ऊपर कई बार उड़ानें की और शत्रु के विमानों को खदेड़ा तथा उनसे लड़ाई लड़ी। 18 सितम्बर 1965 को शत्रु के विमान के साथ हुई एक रोमांचकारी मुठभेड़ में उन्होंने बड़ी कुशलतापूर्वक कलाबाजी, साहस एवं निर्णायक बुद्धि का प्रदर्शन किया तथा शत्रु के एक सैबर-जेट विमान को मार गिराया।

स्क्वाड्रन लीडर अमरजीत सिंह सिंधू द्वारा प्रदर्शित साहस एवं कर्त्तव्यपरायणता भारतीय वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप थी।

5. स्क्वाड्रन लीडर डेंजिल कीलर (4805),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर 1965)

19 सितम्बर 1965 को स्क्वाड्रन लीडर डेंजिल कीलर पाकिस्तानी हमले के दौरान मिस्टीयर विमानों का साथ दे रहे थे। उनके चार विमानों की टुकड़ी को शत्रु के चार सैबर-जेट विमानों का मुकाबला करना पड़ा तथा जमीन से 2,000 फुट की ऊंचाई पर यह हवाई लड़ाई हुई और जिसमें शत्रु की विमान-भेदी तोपें भी मार कर रही थीं। उनकी देखरेख में टुकड़ी के उप-नेता ने एक सैबर-जेट विमान को मार गिराया। इसके बाद स्क्वाड्रन लीडर कीलर स्वयं एक सैबर-जैट विमान से जा भिड़े और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

इस समस्त कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर डेंजिल कीलर अपने पायलटों और जमीन पर अपने वायुसैनिकों के लिए प्रेरणा का एक स्रोत थे। उनके द्वारा प्रदर्शित साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता भारतीय वायुसेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप थी।

6. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनय कपिला (5596),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर 1965)

19 सितम्बर 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनय कपिला ने 4 नैट विमानों की एक टुकड़ी के उप-नेता के रूप में पाकिस्तान के चार सैबर-जेट विमानों के साथ हुई एक हवाई लड़ाई में अपनी टुकड़ी के नेता को बड़ी बहुमूल्य मदद दी। लड़ाई जमीन से 2,000 फुट से भी कम की ऊंचाई पर लड़ी गई जिसमें जमीन से शत्रु की विमानभेदी तोपें भी सक्रिय थीं। उन्होंने शत्रु के एक विमान को मार गिराया और एक अन्य विमान को धराशायी करने में अपने नेता की मदद की।

इस कार्यवाही में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनय कपिला ने साहस और उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

7. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अजय कुमार मजूमदार (5071),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 सितम्बर 1965)

20 सितम्बर 1965 को 2 नेट विमानों की टुकड़ी के नेता के रूप में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अजय कुमार मजूमदार को दो हण्टर विमानों के साथ लाहौर क्षेत्र के ऊपर गश्त लगाने का आदेश दिया गया। शत्रु के चार सैबर-जेट विमानों को देख कर टुकड़ी को आश्चर्य हुआ। महान् प्रत्युत्पन्नमति के साथ फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट मजूमदार ने हण्टर विमानों को अपने बचाव के लिए मुड़ने का आदेश दिया और उसी समय उन्होंने सेबर विमानों को खदेड़ने के लिए प्रयास किया। इस हवाई लड़ाई में उन्होंने शत्रु के एक विमान को मार गिराया।

इस मुठभेड़ में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अजय कुमार मजूमदार ने भारतीय वायुसेना की उच्च परम्परा के महान् कौशल और नेतृत्व का परिचय दिया।

दिनांक 16 अक्तूबर 1965

सं० 127-प्रेज़०/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महा-वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. ले० कर्नल नरेन्द्र नाथ खन्ना (आई० सी०-4018),
2री बटालियन, सिख रेजिमेंट। (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

ले० कर्नल नरेन्द्र नाथ खन्ना सिख रेजिमेंट की उस बटालियन का नेतृत्व कर रहे थे, जिसने जम्मू-कश्मीर में युद्ध विराम रेखा के पार राजा चौकी पर मजबूत किलेबन्दी की थी, कब्जा कर लिया। 6 सितम्बर 1965 को ले० कर्नल खन्ना ने जब अपनी तीन कम्पनियों से इस स्थान को घेरते हुए हमला बोला तो उनकी कम्पनियों को शत्रु की मझौली मशीन गनों और .50 ब्राउनिंगों की भारी गोलाबारी और अन्य हल्के स्वचालित हथियारों की मार का सामना करना पड़ा। इसके फलस्वरूप धावा बोलने वाली दो कम्पनियों को पीछे हटना पड़ा और वे चारों ओर से शत्रु द्वारा की जा रही भारी गोलाबारी में घिर गये जिससे उनका आगे बढ़ना रुक गया। ले० कर्नल खन्ना ने इन कम्पनियों को अपने उत्साहवर्धक शब्दों से प्रेरित किया और यद्यपि वे शत्रु के हथगोले से घायल हो चुके थे तथापि उन्होंने दूसरे आक्रमण का स्वयं नेतृत्व किया और अपने लक्ष्य में सफल हो गये। आखिरी हमले का नेतृत्व करते हुए उन्हें .50 ब्राउनिंग का एक गोला लगा और बाद में गहरे घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गयी। ले० कर्नल खन्ना के साहस, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व के बिना शत्रु के इस मजबूत मोर्चे पर कब्जा नहीं हो सकता था। उनका यह असाधारण बलिदान भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप था।

2. मेजर भूपिन्दर सिंह (आई० सी०-4466),
4 हडसन्ज हार्स/(**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर 1965)

हडसन्ज हार्स के स्क्वाड्रन कमांडर, मेजर भूपिन्दर सिंह ने, 11 और 19 सितम्बर 1965 के बीच, पाकिस्तान में फिलौरा और सोदरेके की लड़ाई में अपनी स्क्वाड्रन का विशिष्ट नेतृत्व किया। उन्होंने बड़ी कुशलता से अपने स्क्वाड्रन को फैला कर साहस पूर्ण कार्रवाई की, जिसके फलस्वरूप उनकी स्क्वाड्रन ने भारी संख्या में पाकिस्तानी टैंकों और दूसरे साजसामान को नष्ट किया। यद्यपि अनेक बार उनके टैंक को गोला लगा, फिर भी वे बराबर प्रभावशाली ढंग से कमान संभाले रहे, और बहादुरी के अपने अनेक कारनामों से अपने जवानों को हिम्मत से लड़ने की प्रेरणा देते रहे। 19 सितम्बर 1965 को, सोदरेके की लड़ाई में उनके

टैंक पर गोला लगा और वह जल उठा। टैंक से निकलने की कोशिश में वे बुरी तरह जल गए। यद्यपि उनको बाहर निकाल लिया गया परन्तु बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच, अपने बहुत-से टैंकों के अयोग्य हो जाने पर भी, अपने दो ही टैंकों से शत्रु से लड़ते रहकर, मेजर भूपिन्दर सिंह ने सराहनीय संकल्प और साहस का परिचय दिया। भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल, उन्होंने निजी वीरता एवं बलिदान का एक प्रेरणाप्रद उदाहरण स्थापित किया।

3. मेजर आसाराम त्यागी (आई० सी०-13056), 3री बटालियन, जाट रेजिमेंट। (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर 1965)

21/22 सितम्बर 1965 की रात को, पाकिस्तान में डोगराई गांव में एक शत्रु की स्थिति को काबू करने के लिए मेजर आसा राम त्यागी ने स्वयं जाट बटालियन की एक कम्पनी की अग्रिम पलाटून का नेतृत्व किया जो टैंकों के एक ट्रूप से सुरक्षित थी जो कि पिलबाक्सों तथा रिकायललैस गनों को आवरण दे रही थी। शत्रु के मोर्चे पर आक्रमण करते समय, मेजर त्यागी को दाहिने कंधे पर दो गोलियां लगीं। चोट लगने पर भी, वह शत्रु के टैंकों की ओर बढ़ते गए तथा हथगोलों से शत्रु के टैंकों के चालक को हताहत किया और दो टैंक ठीक हालत में पकड़ लिए। इस कार्य में उनको फिर तीन और गोलियों लगीं किन्तु वह अपनी कम्पनी का नेतृत्व करते रहे जब तक कि वह मूर्छित हो कर गिर न पड़े। बाद में उन्हें फौजी अस्पताल पहुंचाया गया जहां वे मृत्यु को प्राप्त हुए। उनकी विशिष्ट वीरता से प्रेरित होकर उनके जवानों ने अपने लक्ष्य की पूर्ति की।

सं० 134-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिय में प्रदर्शित वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर सोमेश कपूर (आई०सी०-7015), 1 ली बटालियन, सिख रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 अगस्त 1965)

22 अगस्त 1965 को सिख रेजिमेन्ट की एक बटालियन के कम्पनी कमान्डर मेजर सोमेश कपूर को आदेश दिया गया कि वे पुंछ क्षेत्र में पाकिस्तानी चौकियों पर 24 अगस्त 1965 तक कब्जा कर लें। शत्रु को दोनों ओर से घेरने के लिए उपयुक्त रास्ते नहीं थे, अतः तीन प्लाटूनों के साथ शत्रु पर सामने से ही हमला करने का फैसला किया गया। 24 अगस्त 1965 को जैसे ही आगे वाली प्लाटून शत्रु की पहली चौकी में घुसी, तभी मेजर कपूर ने तुरन्त ही दूसरी चौकी पर हमला बोलने का निश्चय किया। रास्ता इतना सकरा था कि सेना एक-एक की कतार में ही आगे बढ़ सकती थी। 2 सैनिक आगे रखकर मेजर कपूर ने अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया और वे प्रथम चौकी की ओर आगे बढ़े। जबकि वे लक्ष्य से लगभग 50 गज की दूरी पर थे, तब शत्रु ने मशीनगनों से गोले बरसाने शुरू किए। मेजर कपूर ने अपनी दो प्लाटूनों को आवश्यक आदेश दिए और तीसरी प्लाटून के साथ शत्रु के अग्रिम ठिकाने की ओर बढ़े और शत्रु के क्षेत्र में काफी अन्दर जाकर धावा बोला। आक्रमण की गति तथा वेग ने शत्रु के अवरोध को भंग कर दिया और आधे घण्टे में ही चौकी पर अधिकार हो गया। शत्रु के 8 सैनिक मारे गए, 6 पकड़े गए और बहुत-सा गोलाबारूद भी हमारे हाथ लगा।

मेजर सोमेश कपूर का नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता उनके जवानों के लिये प्रेरणा का एक स्त्रोत तथा भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप थी।

2. 4139235 लांस हवलदार उमराव सिंह, 1 ली बटालियन, पैराशूट रेजिमेन्ट (**मरणोपरांत**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—30 अगस्त 1965)

30 अगस्त, 1965 को जम्मू-कश्मीर में पैराशूट रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी को हाजी पीर दर्रे में एक गोल कंटूर पर कब्जा करने का आदेश हुआ। लांस हवलदार उमराव सिंह हमला करने वाली प्लाटूनों की एक प्रमुख टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे थे। पहले तो शत्रु की केवल दो हल्की मशीनगनों ने गोलाबारी शुरू की परन्तु जैसे ही, हमारे धावा बोलते हुये सैनिक शत्रु के ठिकाने के नजदीक पहुंचे, तभी उनके मोर्चे से दूसरी हल्की मशीनगन ने गोलाबारी शुरू की और हमारा आक्रमण रुक गया। इस महत्वपूर्ण घड़ी में अपनी जान की परवाह किए बिना लांस हवलदार उमराव सिंह ने शत्रु की हल्की मशीनगन की तरफ आक्रमण किया और अपने साथियों को अपने पीछे आने के लिए ललकारा। मशीनगन के 20 गज की दूरी तक पहुंच कर उन्होंने वहां से एक हथगोला फैंका और उसे शांत कर दिया। जैसे ही उन्होंने यह कार्य किया हल्की मशीनगन का एक गोला उनके सीने पर लगा और वे वीरगति को प्राप्त हुये। उनकी बहादुरी और समय पर शत्रु की मशीनगन को नष्ट करने की कार्रवाई के फलस्वरूप हाजी पीर दर्रे के कंटूर पर कब्जा हो गया।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार उमराव सिंह ने अनुकरणीय साहस और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

3. 5438003 राइफलमैन धन बहादुर गुरुंग, 2री बटालियन, 5वीं गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर 1965)

7/8 सितम्बर 1965 की रात्रि को सियालकोट क्षेत्र में गोरखा रेजिमेन्ट की बटालियन की एक कम्पनी, जिस ने शत्रु की एक मजबूत चौकी पर अधिकार करने में अदम्य साहस का परिचय दिया, के नव-प्रशिक्षित सिपाहियों में राइफलमैन धन बहादुर गुरुंग भी था। राइफलमैन गुरुंग प्लाटून कमांडर के साथ शत्रु के अत्यन्त मजबूत घेरे को चीरता हुआ अन्दर घुसा; यद्यपि वह गोले के टुकड़ों से अहात हो गया था तथापि उसने शत्रु की अत्यन्त सुरक्षित घेराबन्दी को तोड़ दिया तथा बहुत निकट से अपनी खुखरी से शत्रु के चार सैनिकों को मार गिराया। इससे उसकी प्लाटून शत्रु की घेराबन्दी को तोड़ने में समर्थ हुई।

इस कार्यवाही में राइफलमैन धन बहादुर गुरुंग ने साहस और उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

4. कैप्टन भीखम सिंह (आई०सी०-14602), 7वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेन्ट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर 1965)

कैप्टन (तब लेफ्टिनेंट) भीखम सिंह लाहौर क्षेत्र में पंजाब रेजिमेन्ट की एक बटालियन की एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे। यह बटालियन 9 सितम्बर 1965 को इस क्षेत्र में उस समय भेजी गई थी, जब हमारे सैनिकों का बढ़ाव रुक गया था और उन्हें पीछे हटना पड़ा था। उनकी कम्पनी को दिन के प्रकाश में आगे बढ़कर शत्रु का बढ़ाव रोकने के लिये एक नया मोर्चा लेने के लिए भेजा गया। जब यह पता चला कि शत्रु बहुत सक्रिय नहीं है, तब इस कम्पनी को आगे बढ़कर कक्कड़ में रक्षात्मक मोर्चे पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। यह स्थान उस क्षेत्र में था, जहां से हमारे सैनिकों को पीछे हटना पड़ा था तथा जिसे शत्रु फिर से हथियाने में असफल रहा था। कैप्टन सिंह ने यह काम बड़ी फुर्ती में और कुशलता के साथ किया और रात के समय शत्रु की गोलाबारी के बावजूद नया मोर्चा लगा लिया। इस कार्यवाही में कैप्टन भीखम सिंह ने बहादुरी और उच्च स्तर के नेतृत्व का परिचय दिया।

5. जे०सी० 32607 नायक रिसालदार मोहम्मद अय्यूब खां, 1 ली बटालियन, केवलरी रेजिमेन्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर 1965)

केवलरी रेजिमेन्ट की एक स्क्वाड्रन के एक ट्रूप के कमान्डर नायब रिसालदार मोहम्मद अय्यूब खां को 9 सितम्बर 1965 को आदेश दिया गया कि वे पाकिस्तान में सियालकोट क्षेत्र में सुचेतगढ़ पर शत्रु के हमले को रोकें । इस हमले से इस क्षेत्र में हमारी सेना की मुख्य संचार-व्यवस्था के कटने का खतरा था । वह बड़ी फुर्ती से आगे बढ़ा और उसने इस कुशलता से अपने सैनिकों को तैनात किया कि शत्रु की पैदल सेना की एक कम्पनी और 6 टैंक तितर-बितर हो गए और शत्रु को अपने 4 टैंकों से हाथ धोना पड़ा ।

इस कार्यवाही में, शत्रु की बड़ी संख्या में टैंक सेना के विरुद्ध, नायब रिसालदार मोहम्मद अय्यूब खां ने भारतीय सेना की एक उच्च परम्पराओं के अनुरूप प्रशंसनीय नेतृत्व तथा साहस का प्रदर्शन किया ।

6. मेजर सुरेन्द्र मोहन शर्मा (आई०सी०—10082), 8 वीं बटालियन, जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 सितम्बर 1965)

13/14 सितम्बर 1965 की रात्रि को पाकिस्तान के सियालकोट क्षेत्र के कालरावंडा में टैंकों की एक टुकड़ी के साथ मेजर सुरेन्द्र मोहन शर्मा की कम्पनी तैनात की गई । भारी बमबारी और टैंकों की गोलाबारी के बाद शत्रु की एक पैदल बटालियन ने, जिसके साथ आर्टिलरी और टैंकों की स्क्वाड्रन थी, हमारी कम्पनी पर हमला किया । भारी कठिनाइयों के बावजूद, मेजर शर्मा अपने जवानों को लड़ने के लिए प्रेरित करते रहे । वे शत्रु की भीषण गोलाबारी में प्लाटन के एक छोर से दूसरे छोर तक तब तक संचालन करते रहे जब तक वह प्राणघातक रूप से घायल न हो गए । यद्यपि शत्रु की संख्या और गोलाबारी की ताकत अधिक थी तथापि हमारी कम्पनी ने शत्रु को बहुत अधिक क्षति पहुंचायी । मेजर शर्मा द्वारा प्रदर्शित साहस, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व भारतीय सेना के उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल थी ।

7. 5032131 नायक देबी बहादुर गुरुंग, 2री बटालियन गोरखा राइफल्स (**मरणोपरान्त**)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 सितम्बर, 1965)

14 सितम्बर 1965 को जब सियालकोट क्षेत्र के रसूलपुर में सायं 6—30 बजे गोरखा राइफल्स की बटालियन की कम्पनी ग्रुप पर शत्रु की सेना नें हमला किया तब नायक देबी सिंह गुरुंग उस चौकी पर 3 इंच मोर्टार का संचालन कर रहे थे और आगे बढ़ती हुई शत्रु की सेना को, उन्होंने लगातार और सही निशाने से फायर करते हुए तितर-बितर कर दिया । शत्रु ने पुरानी स्थिति पर काबू करने की दोबारा कोशिश की और नायक देबी बहादुर गुरुंग ने फिर से अपने मोर्टार से फायर करना शुरू किया । जल्दी ही उसके मोर्टार का गोला-बारूद समाप्त हो गया तब उसने स्टेनगन उठाई और राइफल कम्पनी की पंक्ति में मिलकर तब तक हमलावर शत्रु के ऊपर गोलाबारी करता रहा जब तक कि वह अपनी चौकी पर बेजान हो कर गिर नहीं पड़ा । शत्रु पीछे हटा और उसके बहुत सैनिक मारे गए ।

नायक देबी बहादुर गुरुंग द्वारा प्रदर्शित उच्च स्तर का साहस, बलिदान तथा कर्त्तव्यपरायणता भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल थी ।

8. मेजर सर्वजीत सिंह रत्रा (आई०सी—6725), आर्टिलरी रेजिमेन्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 सितम्बर 1965)

मेजर सर्वजीत सिंह रत्रा ने लाहौर क्षेत्र में 15 से 23 सितम्बर 1965 तक वायु निरीक्षण चौकी में काम किया । शत्रु के ठिकानों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने और पाकिस्तानी टैंकों और इच्छोगिल नहर के पुलों आदि पर ठीक निशाना बैठाकर तोप चलाने का निर्देश देने के लिए उन्हें कई बार शत्रु की चौकियों के ऊपर उड़ान भरनी पड़ी । उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ निशस्त्र विमान में ये अत्यन्त खतरनाक उड़ानें भरीं । उनकी सूचना पर हमारे विमानों ने शत्रु के एक महत्वपूर्ण पुल को नष्ट कर दिया और शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों के बाहर निकलने का रास्ता बन्द कर दिया । उनके कार्य के कारण शत्रु के पांच टैंक और अनेक गाड़ियां नष्ट हुईं । कई बार काफी निचाई पर उड़ते हुये उनके विमान पर शत्रु ने मझोली मशीनगनों से गोले चलाए । 17 सितम्बर 1965 को उनके विमान पर शत्रु के तीन एफ-86 लड़ाकू विमानों ने हमला किया । लेकिन उन्होंने बड़ी सूझबूझ से काम लिया और वे हरबार सुरक्षित लौट आए । उनकी बहादुरी और गंभीर संकट का डटकर मुकाबला करने का संकल्प उनके सभी साथियों के लिये एक ज्वलन्त उदाहरण था ।

9. सैकन्ड लेफ्टिनेंट रवीन्द्र सिंह बेदी (आई०सी०—14376)' सिन्ड हार्स) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 सितम्बर 1965)

17 सितम्बर 1965 को सैकन्ड लेफ्टिनेंट रवीन्द्र सिंह बेदी को पाकिस्तान के लाहौर क्षेत्र में झुगियां गांव के निर्मित क्षेत्र से अपनी फौजों के साथ आगे बढ़ने और डोगराई में शत्रु के बन्करों, रिकायललैस तोपों और टैंकों पर हमला करने का आदेश दिया गया । उनके जवानों ने झुगियां के पश्चिम के एक ठिकाने पर जो शत्रु की गोलाबारी की मार में था, से शत्रु की बहुत-सी गाड़ियों को नष्ट कर दिया । यद्यपि उनके टैंकों पर रिकायललैस तोप से प्रहार किया गया और वह गंभीर रूप से घायल हो गए तथापि सैकन्ड लेफ्टिनेंट बेदी अपने जवानों का नेतृत्व करते रहे और अन्त में उन्हें शत्रु की रिकायललैस तोप को बेकार करने में सफलता मिली । उन्होंने तब तक अपना टैंक नहीं छोड़ा जब तक उसमें धुआं नहीं निकला और गोलाबारूद फटना आरम्भ नहीं हुआ । अन्ततः शत्रु की भारी गोलाबारी के बीच उन्हें अपने टैंक से बाहर आना पड़ा यद्यपि वह घायल थे तथापि उन्होंने अपने जवानों को बाहर निकालने में सहायता की और उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया ।

सैकन्ड लेफ्टिनेंट बेदी द्वारा प्रदर्शित नेतृत्व और साहस उनके जवानों के लिए प्रेरणा का एक स्त्रोत तथा भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप था ।

10. मेजर मुहम्मद अहमद जकी (आई०सी०—7613), 19वीं बटालियन, मराठा रेजिमेन्ट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 सितम्बर 1965)

मेजर मुहम्मद अहमद जकी अपनी बटालियन की उस अगली कम्पनी की कमान कर रहे थे, जो लाहौर क्षेत्र में ढट्टी जैमल सिंह पर हमला कर रही थी । 20 सितम्बर 1965 को उनकी कम्पनी को सामने से और बगल से, शत्रु की मझोली मशीनगन, राइफल और ब्राउनिंग मशीनगनों की भारी और पेचीदा गोलाबारी का सामना करना पड़ा तथा एक मझोली मशीनगन की गोली से उनका कंधा तथा भुजा घायल हो गया । स्थिति की गम्भीरता को देख कर, उन्होंने दाईं तरफ और अपने सामने के मोर्चे में बैठे शत्रु के दलों पर शीघ्रता से जम कर हमला किया । ऐसा करते समय वे एक बार फिर गोली से घायल हुये । बार-बार घायल होने पर भी वे शत्रु के मोर्चों पर लगातार हमला करते रहे और उससे गुत्थम-गुत्था लड़ाई लड़ते रहे । उन्होंने स्वयं एक हथगोले से शत्रु का वह बन्कर नष्ट किया जिसमें एक मझोली मशीनगन लगी थी । बहुत अधिक खून निकल जाने के कारण वह थकान से चूर हो कर गिर पड़े परन्तु उनके दृढ़ प्रयासों से प्रेरित हो कर उनकी कम्पनी ने शत्रु के दलों को खत्म कर दिया और लक्ष्य पर कब्जा कर लिया ।

इस युद्ध में मेजर मुहम्मद अहमद जकी ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुरूप प्रेरणादायक नेतृत्व, साहस और कर्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

दिनांक 10 नवम्बर 1965

सं० 123-प्रेज०/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित अति-असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में, उनको विशिष्ट सेवा मैडल "प्रथम श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल जोगिन्दर सिंह (आई० सी०-203)।
ग्रुप कैप्टेन जॉर्ज कनिष्ट कुमार जोन (2132)।
ग्रुप कैप्टेन वाल्टर वर्नन अलेक्जेन्डर लॉयड (2623)।

दिनांक 11 नवम्बर 1965

सं० 128-प्रेज०/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महावीर चक्र" के लिये "बार" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह (आई० सी० 144), म० वी० च०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर से 22 सितम्बर 1965 के बीच, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की सैनिक कार्रवाइयों में मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह ने स्यालकोट क्षेत्र में शत्रु की संख्या में अधिक और उत्तम बख्तरबन्द सेनाओं के विरुद्ध अपनी बख्तरबन्द सेना का नेतृत्व किया। उनकी सामरिक योग्यता और नेतृत्व से प्रेरित होकर उनकी सेनाओं ने शत्रु की बख्तरबन्द सेना के बहुत-से टैंक नष्ट कर दिए। अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना, मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह घमासान लड़ाई के बीच भी युद्ध-स्थल में मौजूद रहे और इससे हमारे टैंक-चालकों को दुश्मन पर निकट से गोलाबारी करने की प्रेरणा मिली। उन्होंने अपनी बेहद जटिल बख्तरबन्द व्यूह की कमान बड़े असाधारण ढंग से की और शत्रु के हौसले को इस बुरी तरह से पस्त किया कि लड़ाई के बाद के दौर में शत्रु के टैंक लड़ाई से कतराते रहे और तबाह करने के लिए उन्हें तलाश करना पड़ता था।

इन सभी कार्रवाइयों में मेजर जनरल राजेन्द्र सिंह ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल, उत्कृष्ट वीरता और उच्चतर स्तर के नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

सं० 129-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए 'महावीर चक्र' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. मेजर जनरल स्वरूप सिंह कलान (आई० सी०-219), एम० सी०

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

5 अगस्त से 22 सितम्बर 1965 के बीच, मेजर जनरल स्वरूप सिंह कलान उड़ी-बारामूला-गुलमर्ग में हमारी सेनाओं की कमान कर रहे थे। पाकिस्तानियों की घुसपैठ की पहली रिपोर्ट इन्हीं के क्षेत्र को मिली। मेजर जनरल कलान ने किशन गंगा के पूर्व के सारे क्षेत्र में इन हमलावरों को खदेड़ने और इनके अड्डों और घुसपैठ के रास्तों पर कब्जा करने की योजना बनाई तथा उसे सम्पन्न किया। हाजीपीर दर्रे पर अधिकार करने और उससे आगे पूंछ की ओर मिलाने की कार्रवाई में इन्होंने खाइयों में छिप कर पाकिस्तान के नियमित सैनिक चौकियों के विरुद्ध अपने सैनिकों का स्वयं नेतृत्व किया जोकि पिछले अठारह सालों से शत्रु द्वारा काफी मजबूत कर ली गई थीं। शत्रु की गोलाबारी के बावजूद इनके साहस और नेतृत्व से प्रेरणा प्राप्त करके इनकी कमान के सैनिकों ने शत्रु की सेना को सुरक्षित स्थानों से बुरी तरह खदेड़ दिया।

इन सभी कार्रवाइयों में मेजर जनरल स्वरूप सिंह कलान ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल उत्कृष्ट साहस और अनुकरणीय नेतृत्व का परिचय दिया।

2. ब्रिगेडियर राम धरम दास हीरा (आई०सी० 2531)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 अगस्त 1965)

इन्फैन्ट्री ब्रिगेड के कमांडर ब्रिगेडियर राम धरम दास हीरा 5 अगस्त 1965 से शत्रु के विरुद्ध सक्रिय युद्ध में भाग ले रहे थे। कश्मीर की घाटी में पाकिस्तानी घुसपैठियों से निपटने के लिए थोड़े ही समय के नोटिस पर वह अपने ब्रिगेड को लेकर आगे बढ़े। पहल करने की दृढ़ता, शक्ति और सूझ-बूझ के साथ उन्होंने घुसपैठियों को भागने पर मजबूर कर दिया और उनको भारी नुकसान पहुंचाया।

पंजाब की सीमा पर पाकिस्तान से युद्ध शुरू होने पर, ब्रिगेड को स्यालकोट का उत्तर से सम्बन्ध विच्छेद करने का काम सौंपा गया था। इस कार्य में रात के समय शत्रु के अनिरीक्षित प्रदेश में से होकर रक्षात्मक मोर्चे बनाने का काम करना था ताकि दिन के समय शत्रु के जवाबी हमलों का मुकाबला किया जा सके। ब्रिगेडियर हीरा ने इस काम को सफलतापूर्वक पूरा किया। शत्रु द्वारा हमले के समय वह अपने जवानों के साथ ही रहे और उन्होंने केवल अपने मोर्चों पर डटे रहने बल्कि शत्रु का भारी नुकसान करने के लिए प्रेरित करते रहे।

इन कार्रवाइयों में, ब्रिगेडियर राम धरम दास हीरा ने उदाहरणीय नेतृत्व, उत्साह और सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया जो भारतीय सेनाओं की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के अनुसार है।

3. मेजर जनरल हर कृष्ण सिबल (आई० सी० 254)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

इन्फैन्ट्री डिवीजन के जनरल अफसर कमांडिंग, मेजर जनरल हर कृष्ण सिबल, तारीख 6 सितम्बर से 22 सितम्बर 1965 तक खालड़ा अक्ष के साथ-साथ पाकिस्तान के विरुद्ध लड़ने वाली सेना के इंचार्ज थे। उनका काम पाकिस्तान के इलाके में इच्छोगिल नहर तक बढ़ना और शत्रु पर गहरा आघात करना था। मेजर जनरल सिबल की कमांड में सेना ने यह काम सफलतापूर्वक पूरा किया और ऐसा करते समय दो बड़ी-बड़ी आक्रमक कार्रवाइयां कीं, जिनमें हुडियारा के नाले को पार करना भी शामिल है। नहर के पूर्वी किनारे तक पहुंचने से पहले उन्होंने बर्की के किलाबंद गांव से शत्रुओं का सफाया कर दिया। ऐसा करते समय उन्होंने घर-घर में युद्ध किया और इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे के साथ-साथ बने कन्क्रीट के मोर्चों पर हमला करके उन्हें तहस-नहस कर दिया। शत्रु द्वारा बार-बार किए गए जवाबी हमले खदेड़ दिए गए और अपने हमलों का दबाव तक जारी रखा गया जब तक कि नहर के किनारे से शत्रुओं का सफाया नहीं कर दिया गया।

इन कार्रवाइयों का संचालन स्वयं मेजर जनरल सिबल ने किया, जो अपनी निजी सुरक्षा का ध्यान न करते हुए अग्रिम पंक्ति में रहे। स्वयं उपस्थित रह कर उन्होंने जवानों को और ज्यादा मुस्तैदी से लड़ने के लिए प्रेरित करना जारी रखा और आमने-सामने हुई इन मुठभेड़ों में हमारी सेनाओं द्वारा प्राप्त सफलता में व्यावहारिक योगदान दिया।

मेजर जनरल हर कृष्ण सिबल द्वारा प्रदर्शित उत्साह, नेतृत्व और कर्तव्यपरायणता भारतीय सेनाओं की सर्वश्रेष्ठ परम्परा के अनुसार है।

4. मजर जनरल गुरबक्श सिंह (आइ० सी०-324)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

माउंटेन डिवीजन के जनरल अफसर कमांडिंग, मेजर जनरल गुरबक्श सिंह को खेमकरण सेक्टर में 6 सितम्बर से 22 सितम्बर

1965 तक पाकिस्तान के विरुद्ध कार्यवाही करने का उत्तरदायित्व सौंपा गया। संख्या में कम होते हुए भी उनकी व्यूह ने पहले ही दिन अपने आरंभिक मोर्चों पर अधिकार जमा लिया। वे उन मोर्चों पर तब तक डटे रहे जब तक कि विपरीत परिस्थितियों और शत्रु की बहुत बड़ी संख्या में आरमर्ड सेना के हमलों से बाध्य होकर पीछे न हटना पड़ा। सेना की अस्थायी रूप से पीछे हटाकर अच्छे सामरिक मोर्चों पर लाने का उद्देश्य शत्रु के किसी भी हमले को विफल बनाना था। शत्रु ने तीन आरमर्ड ग्रुपों और एक इन्फैन्ट्री डिवीजन के साथ आक्रमण किया। यद्यपि शत्रु की सेना संख्या में बहुत ज्यादा थी तथापि मेजर जनरल गुरबक्श सिंह की कमांड में सेना ने न केवल अपने मोर्चों को ही संभाले रखा, बल्कि पहले दिन की मुठभेड़ों के अंत तक लगभग डेढ़ टैंक रेजिमेंट का संहार कर दिया। अगले दिन सुबह होते ही आक्रमणकारी टैंक रेजिमेंट के बचे-खुचे सैनिकों को हमारी सेना के सामने हथियार डालने पर विवश होना पड़ा।

इन कार्रवाइयों से मेजर जनरल गुरबक्श सिंह हर घड़ी अपने जवानों में घूमते रहे, उनके साथ खतरों का मुकाबला करते रहे और युद्ध का संचालन करते रहे। अपने निजी उदाहरण से उन्होंने जवानों को अत्यधिक कठिनाइयों से सफलतापूर्वक जूझने और शस्त्रों से लैस शत्रु सेना को भारी नुकसान पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने उदाहरणीय नेतृत्व, अद्भुत लगन और अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

5. ब्रिगेडियर खेम करण सिंह (आई० सी० 2014)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

आरमर्ड ब्रिगेड के कमांडर, ब्रिगेडियर खेम करण सिंह ने स्यालकोट सैक्टर में लड़ाई के दौरान दिनांक 6 सितम्बर से 22 सितम्बर 1965 तक अपने ब्रिगेड का नेतृत्व किया। अपनी पूरी आर्मर के अलावा, ब्रिगेडियर सिंह को अतिरिक्त आरमर्ड यूनिटों की कमांड सौंपी गई ताकि शत्रु के टैंकों का मुकाबला किया जा सके जो संख्या में अधिक होने के साथ-साथ तकनीकी प्रदर्शन में भी अच्छे थे।

लड़ाई के पहले तीन दिनों में ब्रिगेडियर सिंह की कमांड में हमारी सेना ने शत्रु के 75 से भी अधिक टैंक नष्ट कर दिए जबकि हमारी और नष्ट होने वाले टैंकों की संख्या बहुत कम थी। यह सब ब्रिगेडियर सिंह के निजी उदाहरण के कारण ही हो पाया क्योंकि वह स्वयं अपने टैंक में उस स्थान पर उपस्थित थे जहां शत्रु की अधिकतम गोलीबारी का खतरा था।

ब्रिगेडियर सिंह ने फिलौरा की लड़ाई तीन दिन तक रात-दिन तक लड़ी और अंत में उनके कुशल नेतृत्व, अच्छे सामरिक तथा तकनीकी प्रदर्शन और हमारे सैनिकों के दृढ़ संकल्प के कारण शत्रु को मुंह की खानी पड़ी और उसे इस महत्वपूर्ण संचार केन्द्र से निकाल बाहर कर दिया गया।

पहले पहल उनके व्यूह को शत्रु के हथियारों को अधिक-से-अधिक मात्रा में नष्ट करने का काम सौंपा गया। यह कार्य इतनी अच्छी तरह हुआ कि शत्रु को अपनी अग्रिम पंक्ति बनाए रखने के लिए अपनी समस्त सुरक्षित सेना लानी पड़ी। युद्ध-विराम से कुछ दिन पहले शत्रु सेना के टैंक कमांडरों का मनोबल इतना गिर गया कि वे हमारी सेना से दूरी पर ही लड़ते रहे और आमने-सामने की मुठभेड़ से बचते रहे।

ब्रिगेडियर खेम करण सिंह ने असाधारण नेतृत्व, उच्च सामरिक योग्यता और महान कर्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया, जो भारतीय सेनाओं की सर्वश्रेष्ठ परम्परा रही है।

दिनांक 20 दिसम्बर 1965

सं० 135-प्रेज/65—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति को उसकी अति उत्कृष्ट वीरता एवं आत्म बलिदान के लिए अशोक चक्र, प्रथम श्रेणी प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

श्री चमनलाल, फायरमैन, उत्तरी रेलवे (**मरणोपरान्त**)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 सितम्बर 1965)

13 सितम्बर 1965 को उत्तरी रेलवे के अमृतसर-पठानकोट सेक्शन में गुरदासपुर स्टेशन पर एक मालगाड़ी पर पाकिस्तानी वायुयानों ने भारी गोलाबारी की जिसके फलस्वरूप डीजल तेल ले जानेवाले तीन डिब्बों में आग लग गई और उनमें से एक फट गया। गाड़ी के फायरमैन श्री चमनलाल डिब्बों को जलते हुए देख कर और सम्भावित विनाश का अनुमान कर, तुरन्त उस स्थान पर पहुंचे तथा अपनी सुरक्षा की बिल्कुल परवाह न करते हुए आग लगे हुए डिब्बों को रेलगाड़ी से अलग कर दिया। उन्होंने इस जोखिम कार्य को पूर्ण किया ही था कि वह जलते हुए डिब्बों की लपटों में घिर गए और जल कर मर गए। इस साहसिक कार्यवाही, जिसमें उन्होंने अपने जीवन को बलिदान कर दिया, के फलस्वरूप गाड़ी के शेष डिब्बे सुरक्षित स्थान पर ले जाए जा सके।

अपने उदाहरणीय साहस, कुशलता, पहलशक्ति तथा अपनी सुरक्षा की पूर्ण अपेक्षा से श्री चमनलाल ने न केवल शेष डिब्बों तथा मूल्यवान सामान को जलने से बचाया अपितु रेलवे स्टेशन पर उपस्थित अनेक व्यक्तियों की जान भी बचाई।

उनका महान जीवन-बलिदान शौर्य तथा निस्वार्थ कर्त्तव्य-परायणता का एक ज्वलंत उदाहरण रहेगा।

बाई० डी० गण्डेविया, राष्ट्रपति के सचिव

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली-1, दिनांक 6 दिसम्बर 1965

सं० 47/29/65-एफ० पी०—भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संकल्प संख्या 1/29/58 एफ० पी०, तारीख 5 फरवरी, 1965 में निहित प्रस्तावना और फिल्म सलाहकार बोर्ड के कार्यसंचालन सम्बन्धी नियमों में एतद्द्वारा निम्नलिखित और संशोधन किए जाते हैं :—

वर्तमान प्रस्तावना की जगह, यह रखा जाए :

"भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के संकल्प संख्या 1/51/54-एफ०, तारीख 2 फरवरी, 1955 का अधिक्रमण करते हुए, फिल्म सलाहकार बोर्ड, बम्बई के कार्य और चलचित्र अधिनियम, 1952 (1952 का 37वां) की धारा 12 की उप-धारा (4) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा और इसी प्रकार के अपने-अपने कानूनों के अन्तर्गत विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा जारी किए गए निदेशों के अनुसार, फिल्मों को वैज्ञानिक फिल्म, शिक्षा सम्बन्धी फिल्म समाचार और सामयिक घटनाओं की फिल्म, डाकुमेंटरी फिल्म या देश में बनी फिल्मों के रूप में मंजूरी के बारे में निम्नलिखित नियम अधिसूचित किए जाते हैं। ये नियम सोमवार, 16 फरवरी, 1959 से लागू होंगे।"

वर्तमान नियम 1 की जगह, यह रखा जाए :

"फिल्म सलाहकार बोर्ड का काम होगा कि वह चलचित्र अधिनियम, 1952 (1952 का 37वां) की धारा 12 की उप-धारा (4) के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा और इसी प्रकार के अपने-अपने कानूनों के अन्तर्गत राज्य सरकारों द्वारा जारी किए निदेशों के अनुसार, फिल्मों को वैज्ञानिक फिल्म, शिक्षा सम्बन्धी फिल्म, समाचार और सामयिक घटनाओं की फिल्म, डाकुमेंटरी फिल्म या देश में बनी फिल्मों के रूप में स्वीकार करने के लिए उनकी उपयुक्तता के बारे में केन्द्रीय सरकार को अपनी सिफारिशें दें।"

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक-एक प्रति निम्नलिखित को भेज दी जाए :—

1. अध्यक्ष, फ़िल्म सलाहकार बोर्ड,
   91, वालकेश्वर रोड, बम्बई-6,

2. सचिव, फ़िल्म सलाहकार बोर्ड,
   91, वालकेश्वर रोड, बम्बई-6,
   (10 प्रतियां और एक-एक प्रति फ़िल्म सलाहकार बोर्ड के सभी सदस्यों को दे दी जाए) ।

3. दि कंट्रोलर आफ़ फ़िल्म डिवीजन,
   24-पैडर रोड, बम्बई-26,

4. सभी राज्य सरकारों आदि के मुख्य सचिव ।

आदेश दिया जाता है कि सर्व-साधारण की जानकारी के लिए इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

देसराज खन्ना, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 5th September 1965

No. 130-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Squadron Leader TREVOR KEELOR (4818), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—3rd September,* 1965)

At about 0700 hours on the 3rd September, 1965, on receipt of a report that a formation of Pakistani fighters was circling over our army position in the Chhamb sector of Jammu & Kashmir, a formation of Gnat aircraft was ordered to intercept the intruders. Approaching the area, Squadron Leader Trevor Keelor, who was a section leader in the Gnat formation, sighted enemy F-86 Sabre jets and engaged them in air battle. When the combat was in progress, F-104 Star fighters of the Pakistani Air Force also joined in. Unmindful of the numerical superiority of the enemy, Squadron Leader Keelor chased a Sabre jet and pressed home his attack until the enemy aircraft caught fire and disintegrated in the air. This was the first victory of our Air Force in the air battles against the Pakistani Air Force.

In this operation, Squadron Leader Trevor Keelor displayed courage and leadership of a high order in the best traditions of the Indian Air Force.

2. Flight Lieutenant VIRENDER SINGH PATHANIA (5198), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—4th September,* 1965)

Flight Lieutenant Virendra Singh Pathania was one of the Gnat pilots who were sent to Pathankot to establish our air superiority in that region during the recent operations against Pakistan. He flew repeated missions seeking out Pakistani aircraft and engaging them. On the 4th September, 1965, during one such mission he came up against a formation of enemy Sabre jets and immediately engaged them in battle. With great confidence and courage, he out-manoeuvred the enemy all the time, got behind one of the enemy Sabres and shot it down. In this encounter Flight Lieutenant Virender Singh Pathania displayed cool courage and firm determination in the best traditions of the Indian Air Force.

The 10th September 1965

No. 124-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Captain CHANDER NARAIN SINGH (IC-12701), 2nd Battalion, The Garhwal Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—5th August* 1965)

On the 5th August, 1965, Captain Chander Narain Singh was detailed to search for five Pakistani soldiers who were reported to have been seen in the vicinity of a Brigade Headquarters in Poonch area. While searching an area at a height of about 6,000 feet, the patrol party encountered heavy Pakistani Light Machine Gun, mortar and grenade fire from a higher position and one of our other ranks was killed in this action. Undeterred by heavy enemy fire, Captain Singh took a flanking position from where better cover was available, fired at the enemy Light Machine guns and silenced them. Gauging the numerical superiority of the enemy, Captain Singh took the bold decision to launch a night attack. In complete disregard for his personal safety, he led a charge with a handful of men to within 50 yards of the enemy position, in the face of heavy grenade bursts and mortar fire. He pressed home a second charge, but was killed by a Light Machine Gun burst within 10 yards of the enemy post. In this action, six enemy soldiers were killed, many more wounded, and the enemy left behind considerable quantities of arms, ammunition and equipment.

Throughout this operation, Captain Chander Narain Singh displayed conspicuous bravery and sacrifice in the best traditions of the Indian Army.

2. Lieutenant Colonel GURBANS SINGH SANGHA (IC-2990), 3rd Battalion, The Mahar Regiment.

(*Effective date of award—15th August* 1965)

On the 15th August, 1965, in the area of Dewa Camp in Jammu and Kashmir, a group of an Infantry Brigade suddenly came under heavy and concentrated Pakistani artillery fire, as a result of which the Commander of our Brigade group was killed. Lieut.-Colonel Gurbans Singh Sangha, who was commanding a Mahar Battalion, extricated his battalion and continued to maintain his front intact throughout the day in spite of heavy enemy shelling. By holding Mandiala crossing, he stabilized the situation. Subsequently, he directed his battalion with courage and confidence and recaptured three forward posts in the face of stubborn enemy resistance.

Again on the 1st September, 1965, when his battalion was cut off from the Brigade by the enemy's heavy armour thrust, he presented strong resistance and foiled all attempts of the enemy to encircle and destroy his force. Throughout this operation which lasted about three weeks, Lt.-Colonel Gurbans Sangha displayed commendable courage and leadership in the best traditions of the Indian Army.

3. Major RANJIT SINGH DAYAL (IC-4004), 1st Battalion, The Parachute Regiment.

(*Effective date of award—25th August* 1965)

On the night of the 25th/26th August, 1965, Major Ranjit Singh Dayal led an assault on Sank in Jammu and Kashmir, which was stalled by heavy Pakistani fire. Acting with cool courage, Major Dayal managed to extricate his company intact and on the following night he again led an assault and captured Sank. He pursued the enemy relentlessly and fighting with great zeal, captured Ledwali Gali by 1100 hours on the 27th August, 1965. Thereafter, marching by night through very difficult terrain, he took the enemy by surprise and at 1100 hours on the 28th August, 1965, captured Haji Pir Pass. In this action a Pakistani Officer and 11 Pakistani other ranks were taken prisoner. On the following morning, Major Dayal deployed a platoon to capture another feature. Seeing that our patrol had come under heavy enemy fire, he immediately went to help it with another platoon. In the face of heavy enemy Machine gun and mortar fire, he led his two platoons in a lightning attack, as a result of which the enemy fled in confusion.

Throughout this operation, Major Ranjit Singh Dayal displayed outstanding leadership and courage of a very high order in the best traditions of the Indian Army.

4. Wing Commander WILLIAM MACDONALD GOODMAN (3571), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

During the period from the 1st to the 9th September, 1965, Wing Commander William MacDonald Goodman led a number of reconnaissance and ground attack missions on Pakistani tank and troop concentrations, undeterred by heavy air and ground opposition from the enemy. He was a source of inspiration to all ranks under his command. Under his guidance his unit maintained a very high standard of serviceability, which contributed to a number of successful air strikes on enemy positions.

The gallantry and leadership displayed by Wing Commander William MacDonald Goodman were in the best traditions of the Indian Air Force.

5. Major BHASKAR ROY (IC-8119), 20 Lancers.

(*Effective date of award—1st September* 1965)

On the 1st September 1965, the Pakistani forces attacked our positions in the Chhamb sector with a large number of tanks. Major Bhaskar Roy was then commanding a squadron of an Armoured Corps Regiment in that area. Undaunted by overwhelming and superior enemy armour, Major Roy employed his armour boldly and skilfully, stemmed the enemy advance and foiled the enemy's attempts to encircle the Brigade. In the tank to tank battle, Major Roy destroyed 13 enemy tanks and disabled several others.

Throughout this operation, Major Bhaskar Roy displayed conspicuous bravery and leadership of a very high order in the best traditions of the Indian Army.

6. Wing Commander PREM PAL SINGH (3871), General Duties (Plot).

(Effective date of award—6th September 1965)

Wing Commander Prem Pal Singh was Commanding Officer of an Operational Bomber Squadron which achieved a high pitch of operational preparedness within a short time. During the period from the 6th to the 9th September, 1965, he undertook six major offensive and tactical close support operations, which included reconnaissance over the Sargodha airfield complex, Dab, Akwal and Marud airfields, marking of Peshawar airfield and bombing of Pakistani troop and armour concentrations in the various sectors. Disregarding his personal safety, in these very dangerous operations in the face of heavy enemy anti-aircraft fire, he led a number of bombing and reconnaissance missions deep into enemy territory and carried out his missions with courage, determination and tenacity.

Wing Commander Prem Pal Singh displayed a high sense of duty, professional skill and gallantry in the best traditions of the Indian Air Force.

No. 131-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. 3342155 Lance Havildar GURDEV SINGH, 1st Battalion, The Sikh Regiment.

(Effective date of award—24th August, 1965)

On the 24th August, 1965, a company of a Sikh Battalion was ordered to capture an important objective in the Tithwal sector in Jammu & Kashmir, for which it was necessary to clear a Pakistani post earlier. When the forward platoon closed in on the enemy post and severe hand-to-hand fighting developed, Lance Havildar Gurdev Singh was ordered to strengthen the assault with his section. While charging the enemy, Lance Havildar Singh was severely wounded in the left arm by a splinter. In spite of his injury, he pressed forward the attack using his bayonet and shooting at the enemy with one hand. Thereafter, on the commencement of the main attack on the objective, he refused to be evacuated and improvised a sling for his wounded arm and joined the main attack. By firing a sten gun with his right hand and throwing grenades with his wounded left arm, he cleared three enemy bunkers almost single-handed. Subsequently, deploying his section on the captured position, he joined the reserve platoon which was then attacking the depth localities of the enemy and bravely moved from bunker to bunker. He refused to be evacuated till the entire company reorganisation was complete.

Lance Havildar Gurdev Singh's complete disregard for his own safety in the face of the enemy and his unflinching devotion to duty were a source of great inspiration to his men.

2. Lieutenant Colonel SAMPURAN SINGH (IC-8041), 16th Battalion, The Punjab Regiment.

(Effective date of award—26th August, 1965)

In order to advance to Haji Pir Pass it was essential for our Army to capture Bedori, a tactical feature overlooking the entire area and held by two Pakistani companies armed with Light and Medium Machine Guns. The approaches to the feature were precipitous and extremely difficult. Two previous attempts to capture it had failed on the 26th and 27th August 1965.

On the 28th August, 1965, a battalion of the Punjab Regiment, which had been ordered to capture Bedori, was pinned down by heavy enemy fire. At this crucial moment Lt. Colonel Sampuran Singh, who was commanding the battalion, personally led his men in an attack on the objective with courage and determination. In total disregard of his personal safety, he advanced with his men against intense enemy fire and captured Bedori by the following morning.

In this operation, Lt. Colonel Sampuran Singh displayed courage and leadership of a high order in the best traditions of the Indian Army.

3. Flight Lieutenant TRILOCHAN SINGH (5043), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—1st September 1965)

During the recent operations against Pakistan, Flight Lieutenant Trilochan Singh who was Deputy Flight Commander in an Operational Squadron, flew 14 operational sorties. He carried out his mission with great determination and courage in the face of heavy enemy ground fire and air opposition and succeeded in destroying a considerable number of camouflaged enemy tanks and heavy guns. He gave effective air support to our ground forces and carried out successful air strikes on enemy armour, troop concentrations and convoys.

Throughout the operations, Flight Lieutenant Trilochan Singh displayed courage, determination and professional skill of a high order.

4. JC-13166 Subedar MAN BAHADUR GURUNG, 3rd Battalion, The 8th Gorkha Rifles.

(Effective date of award—3rd September 1965)

During the attack on Top Sanjoi in Jammu & Kashmir, which was a very strong enemy position held by picked soldiers and strengthened by intensive mines and barbed wire entanglements, Subedar Man Bahadur Gurung was the leading platoon commander of the assaulting company. On the night of the 3rd/4th September, 1965, as his platoon drew close to the position, the enemy opened up heavy and effective fire. It was difficult to make further progress unless the strongly entrenched Medium and Light Machine Gun and rocket-launcher nests were destroyed. Realising the gravity of the situation, Subedar Gurung took another section with him and, by a careful and bold manoeuver, secured the enemy's right flank and fired four rockets on the enemy strong points. Then, with his two sections, he charged the enemy's forward positions. Finding a stone wall about six feet high protecting the enemy's bunkers, he and some of his men climbed a tree and jumped on to the bunkers. The enemy soldiers then left their positions and as they ran back were mowed down. When Subedar Gurung's platoon moved forward, another enemy Light Machine Gun opened fire from his right flank. He ordered his Light Machine Gun to engage the enemy gun and himself crawled and went behind the enemy positions. From there he threw two hand grenades into the enemy bunker and fired bursts from his sten gun. He then charged inside the bunker with his kukri cutting down the enemy gunners and thus paving the way for further advance.

Throughout this operation, Subedar Man Bahadur Gurung displayed great valour, determination and devotion to duty, which were a source of inspiration to his men.

5. 1142832 Havildar C. PERUMAL, 27 Armoured Regiment.

(Effective date of award—3rd September 1965)

On the 3rd September, 1965, while commanding a detachment of an Air Defence Battery guarding Akhnur bridge, Havildar C. Perumal displayed courage and initiative directing the fire of his 40 MM Gun in an accurate manner resulting in the shooting down of a Pakistani Sabre Jet.

6. 5735805 Lance Naik RAJ BAHADUR GURUNG, 3rd Battalion, The 8th Gorkha Rifles.

(Effective date of award—3rd September, 1965)

Lance Naik Raj Bahadur Gurung was section commander of the leading platoon of a company which was ordered to capture Top Sanjoi in Jammu & Kashmir on the night of the 3rd/4th September, 1965. As the platoon came close to its objective, the enemy opened fire with Medium Machine Guns, Light Machine Guns and rockets, as a result of which three of our men were killed. Under an order from his platoon commander, Lance Naik Gurung took his section to the right of the bunkers and charged the enemy strong points. As his section drew close to the enemy's positions, he noticed a stone wall about six feet high protecting the bunkers. He climbed a tree and jumped on to the roof of the enemy bunker. Then, rushing inside, he slaughtered the enemy gunners and captured their Medium Machine Gun. Thereafter as a result of heavy fire brought down by his section, the enemy left their forward positions and started falling back, when Lance Naik Gurung killed three more enemy soldiers. Inspired by his boldness, his men made short work of many enemy bunkers.

In this action, Lance Naik Gurung displayed courage, determination and leadership of a high order in the best traditions of the Indian Army.

7. 1155700 Havildar POTHARAJ, 27 Armoured Regiment.

(Effective date of award—5th September 1965)

On the 5th September 1965, while commanding a detachment of an Air Defence Battery guarding Tawi Bridge in Jammu, Havildar Potharaj displayed courage and initiative in directing the fire of his 40 MM Gun in an accurate manner resulting in the shooting down of a Pakistani Sabre Jet.

8. Flight Lieutenant DEV NATH RATHORE (5780), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—6th September, 1965)

On the 6th September, 1965, Flight Lieutenant Dev Nath Rathore was detailed as the leader of a section of two aircraft to carry out a dusk combat air patrol over Halwar airfield. The airfield was subjected to an attack by four Pakistani Sabres which had also engaged two of our aircraft orbiting the airfield. In complete disregard of his personal safety, Flight Lieutenant Rathore flew his section through a heavy barrage put up by our ground defences, engaged one of the enemy aircraft and shot it down before it could inflict any damage.

The courage and leadership displayed by Flight Lieutenant Dev Nath Rathore in this combat were in the best traditions of the Indian Air Force.

9. Flying Officer ADI RUSTOMJI GHANDHI (7722), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—6th September, 1965)

On the 6th September, 1965, Flying Officer Adi Rustomji Ghandhi was number two in a section of two aircraft on a Combat Air Patrol sortie over Halwara. Two other aircraft were also airborne on the same mission for mutual cover. Suddenly four Pakistani F-86 aircraft sneaked in low to attack the airfield and pulled up just behind Flying Officer Ghandhi's section. One of the enemy Sabres shot down his leader before it was spotted. Undeterred by this sudden misfortune, Flying Officer Ghandhi skilfully manoeuvred his aircraft, got behind the F-86 aircraft and shot it down. Thereafter, overwhelmed by numbers, he was himself shot down. The Sabres were however, driven off, the enemy attack foiled, and our airfield, aircraft, and ground installations escaped damage. In this operation, Flying Officer Ghandhi displayed commendable courage in the face of the enemy.

10. Flying Officer VINOD KUMAR NEB (8189), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—6th September, 1965)

On the 6th September, 1965, Flying Officer Vinod Kumar Neb was detailed as number two in a section of two aircraft to carry out a standing patrol over Halwara airfield. Two of our aircraft were on the circuit. Suddenly four Pakistani Sabre Jets sneaked in low and started to attack the airfield and also our aircraft on the circuit. Flying Officer Neb, though still under training and short of experience, attacked the enemy formation with supreme confidence and shot down one of the enemy Sabres.

During this encounter, Flying Officer Vinod Kumar Neb displayed commendable courage and devotion to duty of a high order.

11. 3946403 Naik PREM SINGH, 3rd Battalion, The Dogra Regiment.

(Effective date of award—6th September, 1965)

Naik Prem Singh was a leading section commander of a company entrusted with the task of capturing a strongly held Pakistani post in the Poonch sector in Jammu & Kashmir. After marching for a night, the company, in spite of heavy enemy machine gun fire, reached the wire barricade in front of the enemy position. Realising that delay at the assault line would entail heavy casualties on our side, Naik Prem Singh rushed forward to cut a gap in the wire to enable his company to move forward. While doing so, he was hit by an enemy bullet, but in spite of the injury, completed his task and led his company to the objective, where he collapsed due to loss of blood. By his gallant action the lives of many others of his company were saved and the objective was captured.

In this operation, Naik Prem Singh displayed leadership, courage and determination of a high order in the best traditions of the Indian Army.

12. 3341107 Naik CHAND SINGH, 2nd Battalion, The Sikh Regiment.

(Effective date of award—6th September, 1965)

Naik Chand Singh was the leading section commander in the assault by two companies on Raja Picquet, a well-fortified defended locality of the enemy across the cease-fire line in the Poonch Sector in Jammu & Kashmir.

At about 0600 hours on the 6th September, 1965, when the companies were at a distance of about 50 yards from the objective, their progress was halted by intense enemy fire. Although in the direct line of fire, Naik Chand Singh rushed forward to the enemy machine gun post, threw grenades into the bunkers and killed the gunners. This gallant action of the NCO made the assault a success and Raja Picquet was captured without many casualties on our side.

In this action, Naik Chand Singh displayed courage, leadership and determination of a high order in the best traditions of the Indian Army.

13. Squadron Leader MADHUKAR SHANTARAM JATAR (4793), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—7th September 1965)

During the recent operations against Pakistan, Squadron Leader Madhukar Shantaram Jatar was the Flight Commander in an operational Squadron which carried out 14 operational sorties. On the 7th September 1965, he led a formation of eight Mysteres on a ground strike mission on Bhagranwala airfield. The raid had to be carried out at a low altitude when visibility was poor. Squadron Leader Jatar inspired his men with courage and tenacity of purpose and the attack on the airfield was pressed home resolutely. As a result one enemy Sabre jet was destroyed and another damaged. After carrying out the mission successfully, Squadron Leader Jatar brought his formation of eight aircraft safely back to the base.

In this operation, Squadron Leader Madhukar Shantaram Jatar displayed leadership, devotion to duty and professional skill of a high order in the best traditions of the Indian Air Force.

14. Squadron Leader SUDARSHAN HANDA (4816), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—7th September, 1965)

At 0945 hours on the 7th September 1965, a formation of four Mystere aircraft led by Squadron Leader Sudarshan Handa took off for an operational mission and flying at a height of only 50 to 100 feet above ground level penetrated into Pakistan territory.

Squadron Leader Handa led the formation accurately to their objective and the formation went into the attack. He dropped his bombs on the Bulk Petrol Installation and opened up with his guns at three Sabre jets parked at the Operational Readiness Platform, one of which burst into flames. He then signalled to the remaining members of the formation to attack an enemy F-104 Star Fighter which was also on the Operational Readiness Platform. By this time the enemy anti-aircraft guns had opened a heavy barrage of fire against all the four aircraft of the formation. After the successful attack, Squadron Leader Handa led the formation back to base safely, all our aircraft landed with only marginal fuel.

The cool courage, devotion to duty and determination displayed by Squadron Leader Sudarshan Handa throughout the operation, were in the finest traditions of the Indian Air Force.

15. Flight Lieutenant ALFRED TYRONE COOKE (6336), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—7th September, 1965)

On the 7th September, 1965 when Kalaikunda airfield was under attack by six Pakistani Sabre jet aircraft, Flight Lieutenant Alfred Tyrone Cooke who was leading two of our aircraft on combat air petrol, immediately led the aircraft into intercept them. Although our own anti-aircraft guns had already started to fire, he engaged two of the enemy aircraft in complete disregard of his personal safety. The enemy aircraft tried evasive and counter-offensive manoeuvres; but with firm determination and exceptional skill Flight Lieutenant Cooke outmanoeuvred the enemy and pressed home his attack and shot down one of the enemy aircraft which disintegrated in mid air. Subsequently, he skilfully put his aircraft in a favourable position behind another enemy aircraft, but by then he had no ammunition left. However, he kept the enemy on the run and the remaining enemy aircraft fled in confusion.

In this action Flight Lieutenant Alfred Tyrone Cooke displayed great courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

16. Flying Officer SUBODH CHANDRA MAMGAIN (6760), General Duties (Pilot).

(Effective date of award—7th September, 1965)

On the 7th September 1965, when Kalaikunda airfield was attacked by six Pakistani Sabre jet aircraft, Flying Officer Subodh Chandra Mamgain, who was flying as 'Wingman' in a section on combat air patrol, followed his leader into intercept them immediately. Although the enemy aircraft were superior in number and our anti-aircraft guns were active over the combat area, Flying Officer Mamgain engaged the enemy aircraft in complete disregard of his personal safety. The enemy aircraft tried evasive and counter-offensive manoeuvres at a very low level; but with firm determination and exceptional skill, Flying Officer Mamgain outmanoeuvred two enemy aircraft and pressed home the attack ruthlessly. This resulted in one of the enemy aircraft being sent spinning to the ground, while the other, badly damaged, was seen escaping trailing a cloud of smoke.

In this encounter, Flying Officer Subodh Chandra Mamgain displayed great courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Air Force.

The 17th September 1965

No. 125-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Lieutenant Colonel DESMOND HAYDE (IC-4036), 3rd Battalion, The Jat Regiment.

(Effective date of award—6th September 1965)

On the 6th September, 1965, when the initial attack on the Ichhogil Canal in Pakistan was launched, Lt. Colonel Hayde, an Officer Commanding of a battalion of the Jat Regiment, captured the western bank of the canal against very stiff opposition from the enemy. It was primarily due to his leadership that not only did his battalion not fall back from the positions which it had occupied, but in fact moved forward in spite of continuous and heavy shelling and frequent air and ground attacks. On the 9th September, 1965, when the enemy launched an attack with Patton and Sherman tanks, his battalion accounted for five of the enemy tanks with recoilless guns. The performance of this battalion throughout the operations was excellent and this was largely due to the great personal courage and exceptional qualities of leadership sown by Lt. Colonel Desmond Hayde.

2. JC-18340 Subedar AJIT SINGH, 4th Battalion, The Sikh Regiment. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—6th September*, 1965)

On the 6th September, 1965, during the attack on Burki village in Pakistan, Subedar Ajit Singh was given the task of destroying a gun emplacement that was holding up the attack. In complete disregard of his safety, he charged the emplacement single-handed; and though wounded in the chest by a burst of medium machine gun fire pressed home the attack and destroyed the post by lobbing a grenade through a loophole in the emplacement. This gallant act not only removed the menace of the machine gun post but also inspired his comrades to destroy the enemy position. Subedar Ajit Singh subsequently succumbed to his injuries.

In this action, Subedar Ajit Singh displayed supreme courage and devotion to duty of an exceptional order.

3. Lieutenant Colonel HARBANS LAL MEHTA (IC-4282), 4th Battalion, The Madras Regiment. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—8th September*, 1965)

In the early hours of the 8th September, 1965, Lt. Colonel Harbans Lal Mehta, while commanding a Battalion in the attack in Sialkot Sector, found that one of his companies was held up by heavy Pakistani machine gun, mortar, rifle and automatic fire. The enemy defences were sited in cane fields and visibility was poor. Seeing the delay in the attack, Lt. Colonel Mehta deployed one of his reserve companies to deal with the enemy's machine gun, but this company was also held up by unforeseen opposition from the flank. Disregarding his personal safety, Lt. Colonel Mehta went forward and personally led the assault. Inspired by his presence in the foremost line of assault, his men pressed home the attack which resulted in the collapse of the enemy's stronghold.

In this action, Lt. Colonel Mehta was fatally wounded. His example of personal courage, leadership and sacrifice were in the highest traditions of the Indian Army.

4. Lieutenant Colonel SALIM CALEB (IC-881), 3rd Cavalry.

(*Effective date of award—10th September*, 1965)

On the 10th September, 1965, Lt. Colonel Salim Caleb was in command of a Cavalry battalion which was engaged in a tank battle with Pakistani tanks near Khem Karan. Despite heavy enemy fire for long spells, he exercised his command with calmness and fortitude and inspired his officers and men to fight against the enemy fearlessly. In this action 15 enemy Patton tanks were destroyed and 9 others which were in good working condition were captured. His cool courage, leadership and foresight contributed greatly to this outstanding success.

No. 132-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Lieutenant Colonel MEGH SINGH (IC-5682), The Guards Regiment.

(*Effective date of award—1st September* 1965).

Lieutenant Colonel Megh Singh of Headquarters Western Command, who, as a Major, was attached to a Brigade Headquarters in Jammu and Kashmir for command duties, successfully conducted three important raids into enemy territory during the period from the 1st to the 11th September 1965. On the night of the 2nd/3rd September 1965, his force blew up a big culvert on the Kotli-Bandigopalpur road disrupting the enemy's line of communication inside their territory. On the 6th September 1965, his column captured the two important picquets—Neja Pir and Ari Dhok. Again on the 10th September 1965, his column went 2 miles deep into enemy territory and effected the Uri-Poonch link-up at Kahuta in spite of heavy enemy fire.

In all these actions, by his exemplary courage and initiative, Lieutenant Colonel Megh Singh inspired confidence in the force of volunteers under him, causing confusion and casualties in the enemy camps and facilitating the success of the Brigade's operational plan.

2. Second Lieutenant SURINDERPAL SINGH SEKHON (IC-13986),
2nd Battalion, The Rajputana Rifles (*Posthumous*).

(*Effective date of award—5th September* 1965).

On the night of the 5th/6th September 1965, after the bridge over the river Ravi near Dera Baba Nanak on the India-Pakistan border was captured by a battalion of the 5th Gorkha Regiment, our positions came under extremely heavy artillery fire as a result of which some men were wounded. During the shelling, 2nd Lieutenant Surinder Pal Singh Sekhon showed great courage and went around helping and dressing the wounded soldiers in his Company. While dressing one of the wounded soldiers, 2nd Lieutenant Sekhon was killed by enemy shelling.

In this action 2/Lt. Surinderpal Singh Sekhon showed gallantry, exemplary devotion to duty and the utmost concern for the men under his command, upholding the highest traditions of the Indian Army.

3. Lieutenant Colonel CHAJJU RAM (IC-1351), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—6th September* 1965)

A steady advance of our forces on the morning of the 6th September 1965, enabled them to eliminate the enemy bridgehead in Dera Baba Nanak area in Pakistan. Having suffered some casualties, the enemy withdrew leaving the bridge intact. Our troops occupied the southern end of the bridge. During the afternoon, the enemy mounted a strong counter-attack across the bridge under cover of very heavy and effective tank and artillery fire and overran two of our forward companies. The enemy brought a troop of medium tanks across the bridge and proceeded to press his advantage. The situation became desperate and Lt.-Colonel Chajju Ram, who was employed as GSO I (Ops) HQ XI Corps, was deputed to deal with it. Having reached the area, he immediately restored confidence in our troops with his determination and drive. His firm bearing, quick planning and leadership in the conduct of the battle put heart into all ranks who promptly proceeded to carry out the orders with courage and vigour. A night attack was launched against the enemy as a result of which the enemy fled in confusion partially destroying the Ravi bridge to prevent our capturing it intact. The enemy left behind large quantities of ammunition and equipment, including four medium tanks. Many prisoners were taken.

This signal success was in a large measure due to the leadership of Lt.-Colonel Chajju Ram. His cool courage and determination were responsible for the rallying and effective employment of our troops which won the day.

4. Captain RAMESH CHANDRA BAKSHI (IC-12831),
6 Bn., The 8th Gorkha Rifles. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—6th September* 1965)

On the 6th September 1965, Captain Ramesh Chandra Bakshi, who was Company Commander of a battalion of a Gorkha Regiment, was ordered to secure by 0400 hours an enemy post on the border in Lahore Sector in Pakistan. He managed to infiltrate his company stealthily opposite his objective by 0355 hours and launched a fierce attack on the enemy. The post had been alerted and reinforced, but was captured after severe hand-to-hand fighting, in which Captain Bakshi sacrificed his life. In this action he was at the forefront of his company and displayed indomitable courage, dash and determination in the highest traditions of the Indian Army.

5. Lieutenant TEJA SINGH (IC-13651),
9th Bn., The Jammu and Kashmir Rifles.

(*Effective date of award—6th September* 1965)

Lieutenant Teja Singh, who was in command of a Company of his battalion, held on to his objective at Khem Karan on the India-Pakistan border on the 6th and the 7th September 1965, in the face of heavy enemy ground and air shelling and averted the enemy attack. His Company ran short of ammunition and water. In the absence of communication with his battalion Headquarters, he personally went and contacted his Headquarters amidst heavy enemy shelling; and withdrew his men safely according to plan. In this operation he displayed courage and leadership of a high order.

6. 6263784 Lance Havildar K. G. GEORGE,
The Corps of Signals.

(*Effective date of award—6th September* 1965)

During the period from the 6th till the 10th September 1965, under persistent enemy shelling and air strafing, Lance Havildar K. G. George continued to lead his section to restore disrupted communications in the Wagah Sector in Pakistan. On the night of the 8th/9th September 1965, notwithstanding risk to his life, he established a line of communication from Brigade Headquarters to the forward battalions during an enemy attack. In doing so, Lance Havildar George displayed courage and devotion to duty of a high order.

7. 2851209 Rifleman MATHAN SINGH,
2nd Bn., The Rajputana Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th September* 1965)

On the night of the 6th/7th September 1965, during a counter-attack on the enemy on the bridge over the river Ravi near Dera Baba Nanak on the India-Pakistan border, Rifleman Mathan Singh was the leader of a Light Machine Gun unit in one of the sections in a company of the Rajputana Rifles. After the battalion had captured its objective, the portion which Rifleman Mathan Singh's section was holding was severely counter-attacked by the enemy. Rifleman Mathan Singh bore the brunt of this attack and kept the enemy at bay. He was severely wounded, but did not leave his gun. When the enemy force attacked again, Rifleman Mathan Singh prevented it from advancing. Meanwhile, the position of our troops on the objective had been consolidated. When the enemy force gave up further attempts to recapture it, Rifleman Mathan Singh was found dead with his gun still to his shoulder.

By his supreme sacrifice, Rifleman Mathan Singh enabled his Company to hold its objective. In this action he displayed gallantry of a very high order in the best traditions of the Indian Army.

8. JC 3310 Subedar C. A. MADHAVAN NAMBIAR, 4th Bn., The Madras Regiment (*Posthumous*).

(*Effective date of award—7th September* 1965).

On the night of the 7th/8th September 1965, when one of our Battalions launched an attack on the enemy in the Sialkot Sector, Subedar C. A. Madhavan Nambiar was commanding the Signal platoon. While providing signal communication to the Battalion, Subedar Madhavan Nambiar saw that our forward companies were held up by Medium Machine Gun and Recoilless Gun fire of the enemy. Although he was not in command of any rifle company, Subedar Madhavan Nambiar mustered a section of the signal platoon and charged the Medium Machine Gun position. Subedar Madhavan Nambiar was killed in this section, but his gallant act enabled our company to resume the assault.

Subedar C. A. Madhavan Nambiar displayed great courage, leadership and devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

9. JC-5234 Risaldar ACHHAR SINGH, The Deccan Horse (9th Horse).

(*Effective date of award—7th September* 1965)

On the 7th September 1965, when the Deccan Horse took part in an attack on the Rohi Bund near Khem Karan on the India-Pakistan border, Risaldar Achhar Singh handled his troop with skill and courage, destroying an enemy tank and damaging another. His example inspired his comrades and made the operation a great success.

10. 1155809 Havildar ATHANIKAL BASIL JESUDASAN, The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Havildar Athanikal Basil Jesudasan, of an Air Defence Regiment, was leader of a 40 Medium Machine Gun detachment deployed for the defence of an important Air Force installation in Amritsar. At 0910 hours on the 7th September 1965, when his gun was being strafed during an air raid by Pakistani F-104 Star fighters and F-86 Sabre jets, Havildar Jesudasan skilfully controlled and aimed his gun at the attacking aircraft. As a result an enemy Sabre jet was damaged and the Air Force installation was saved.

In this action, Havildar Athanikal Basil Jesudasan displayed cool courage and presence of mind.

11. 9065621 Lance Havildar FIDOO RAM, The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

On the night of the 7th/8th September 1965, Havildar Fidoo Ram, who was in charge of a signal detachment, was in the party of the forward observer in the Sialkot Sector. When it became necessary to fire on a strongly held enemy target, it was found that the wireless set was ineffective due to enemy interference and jamming. Although enemy shells were bursting all around, Havildar Fidoo Ram with complete disregard for his own safety, continued to man the wireless communication. In doing so, he showed commendable courage and skill.

12. 1419977 Naik GANESH DATT, 9th Bn., The Kumaon Regiment.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

On the night of the 7th/8th September 1965, while leading a section during an attack on an enemy position in the Sialkot Sector, Naik Ganesh Datt saw that an Light Machine Gun was inflicting casualties on his Company and holding up its advance. With complete disregard for his personal safety, he crawled to the enemy trench and silenced the enemy Light Machine Gun. In this action, he displayed commendable courage and initiative.

13. 2853735 Rifleman MAHILAL SINGH, 4th Bn., The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Rifleman Mahilal Singh was the leader of a Light Machine Gun company detailed to assault a Pakistani position at village Charwa in the Sialkot Sector on the 7th/8th September 1965. The assault was temporarily halted by intense firing from a Pakistani Medium Machine Gun from the right flank. Completely disregarding his personal safety, Rifleman Mahilal Singh approached the enemy gun, engaged and silenced it. Instantly another enemy Medium Machine Gun opened fire. Rifleman Mahilal Singh crawled forward and threw grenades into the post and silenced it. Rifleman Mahilal Singh's courage and dedication to duty were an inspiration to his comrades and contributed largely to the success of the assault.

14. Major MOHAMMED ALI RAAZ SHEIKH (IC-6850), The 16th Light Cavalry. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the 8th September 1965, Major Mohammed Ali Raaz Sheikh, who was in command of a Squadron of an Armoured Brigade in the Sialkot Sector in Pakistan, was ordered to outflank an enemy force from the east of Gadgor so as to cut it off. Another Squadron of the Regiment, advancing up to Gadgor had contacted a Squadron of enemy armour and infantry in well prepared and concealed positions. As Major Sheikh advanced about 3000 yards, he also contacted enemy armour which was supported by dug-in recoilless guns. He at once ordered deployment of his Squadron and himself took up position beside the leading troop. A fierce tank battle ensued, in which Major Sheikh himself took a prominent part and destroyed two enemy tanks, when suddenly he was hit by an enemy shot and was severely wounded. Even so, he kept on engagaing the enemy till he was evacuated to a hospital where he succumbed to his injuries.

The exemplary courage and leadership displayed by Major Mohammed Ali Raaz Sheikh were in the highest traditions of the India Army.

15. Major JITINDER KUMAR (IC-8519), 15th Bn., The Dogra Regiment.

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the 8th September 1965, Major Jitinder Kumar was in Command of a Company of a Dogra battalion in Lahore Sector in Pakistan, when his Company position was attacked by enemy aircraft. With complete disregard for his personal safety Major Jitinder Kumar took up a light machine gun and kept firing at one of the enemy Sabre jets flying low till he shot it down.

Major Jitinder Kumar displayed exemplary courage in this encounter.

16. Second Lieutenant HAR IQBAL SINGH DHALIWAL (EC-55672), The Poona Horse.

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the 8th September 1965, as the troop leader of the vanguard Squadron of the Poona Horse, 2nd Lieutenant Har Iqbal Singh Dhaliwal was leading the advance of his troop in the Sialkot Sector in Pakistan. His first contact was made with five enemy Patton tanks on the North of Phillora cross roads. After he ordered his troop into firing positions, his tank was hit and caught fire. Abandoning the burning tank he and his crew collected in a ditch. The driver was however badly injured and fell near the burning tank. Despite the danger, 2nd Lieutenant Dhaliwal ran forward under direct enemy fire, picked up the driver and then brought his full crew back to the rear of the Squadron position. In this action, 2nd Lieutenant Har Iqbal Singh Dhaliwal displayed exceptional courage and presence of mind and was a source of inspiration to all in his command.

17. Second Lieutenant BHUPINDER KUMAR VAID (EC-55428), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the 8th September 1965, 2nd Lieutenant Bhupinder Kumar Vaid was performing the duties of Observation Post Officer with a Regiment operating in the Sialkot Sector. The Observation Post tank was moving along with other elements of the Regiment, when a fierce tank to tank battle started. 2nd Lieutenant Vaid's tank received a direct hit, as a result of which he was injured and his technical assistant was killed. Despite this set back, 2nd Lieutenant Vaid continued to provide artillery support till his tank was hit again causing a disruption in communication. Disregarding his injury, he left the tank, crawled a distance of about 300 yards and mounted a nearby tank from where he engaged a number of enemy localities inflicting heavy casualties on them and thus enabling his troops to regroup for the remaining part of the operations. The courage and devotion to duty displayed by 2nd Lieutenant Vaid were of a high order and in the best traditions of the Indian Army.

18. Major SURESH CHANDER VADERA (IC-4776), The 3rd Cavalry Regiment.

(*Effective date of award—10th September* 1965)

On the 10th September 1965, in a tank battle with Pakistani tanks near Khem Karan, Major Suresh Chander Vadera, Squadron Commander, 3rd Cavalry, deployed his squadron with considerable imagination and boldness which resulted in the capture of 9 enemy Patton tanks intact, apart from many others destroyed. He showed great personal courage and remarkable leadership in this action which demoralised the enemy completely.

19. JC-2807 Naib Risaldar JAGDISH SINGH,

The Central India Horse.

(*Effective date of award—10th September* 1965)

Naib Risaldar Jagdish Singh was in command of the leading troop of a Squadron of the Central India Horse, which, with the support of an infantry battalion, attacked Burki village in the Lahore sector on the 10th September 1965. As his tank entered the village it was damaged by a mine. Undaunted, he brought down accurate and heavy fire on the enemy force at the Burki bridge and helped the infantry battalion to complete its operational task and capture the objective swiftly. In the actions fought since the 6th September 1965, Naib Risaldar Jagdish Singh was always in the forefront and set a fine example to his men who were inspired by his courage.

20. 3339173 Naib Subedar AJMER SINGH,

4th Bn., The Sikh Regiment.

(*Effective date of award—10th September* 1965)

On the 10th September 1965, during the assault on Burki village in Pakistan, Naib Subedar (then Havildar) Ajmer Singh found his platoon pinned down by the rapid Medium Machine gun fire of the enemy. With great presence of mind, he crawled towards the enemy bunker and although he was hit by a burst, he continued to advance. Inspired by his personal example, his platoon rushed forward and destroyed the enemy position completely.

The leadership and courage displayed by Naib Subedar Ajmer Singh in this action were in the best traditions of the Indian Army.

21. 3348906 Lance Naik PRITAM SINGH,

4th Bn., The Sikh Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—10th September* 1965)

On the night of the 10th/11th September 1965, Lance Naik Pritam Singh led his Section consisting of a handful of jawans and wiped out a Pakistani Machine Gun post in Burki village. He killed the enemy gunner, and in the encounter that followed, bayonetted the other two members of the enemy post. While doing so, he was wounded severely. Disregarding his wounds, he charged the next bunkers where he collapsed.

In this action, Lance Naik Pritam Singh displayed great courage, leadership and devotion to duty in the highest traditions of the Indian Army.

22. 2452001 Sepoy BALAM RAM,

16th Bn., The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—10th September* 1965)

On the 10th September 1965, a battalion of the Punjab Regiment was ordered to capture an enemy position in the Lahore Sector in Pakistan, which was heavily defended and had a number of concrete pill boxes. As Sepoy Balam Ram's Platoon was forming up for the attack, it came under very heavy and accurate automatic and rifle fire from one of the enemy positions. Moving through heavy enemy fire in utter disregard of his personal safety, Sepoy Balam Ram charged the enemy weapon pit, firing from the hip. On coming close to the pill box, his action enabled his number one to throw a grenade into it. Thereafter he stormed the concrete weapon pit, killed all the occupants and captured a Light Machine Gun, automatic rifle and sten gun. This heroic deed of Sepoy Balam Ram was a source of great inspiration to his platoon, which soon overwhelmed the enemy position and secured its objective.

The 22nd September 1960

No. 126-*Pres.*/65.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

Squadron Leader PADMANABHA GAUTAM (4482), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—6th September*, 1965)

Squadron Leader Padamanabha Gautam, Commanding Officer of a Bomber Conversion Training Unit, skilfully adapted his Unit to its operational role at short notice and led it in a number of difficult and dangerous missions. He undertook six important offensive and tactical close support operations over Pakistan territory during the period from the 6th to the 21st September, 1965.

In complete disregard of his personal safety in the face of heavy enemy ground fire and of the risk of attack by Pakistani Sabre jets, Squadron Leader Gautam carried out his missions successfully, with courage and determination. These missions included reconnaissance deep into enemy territory and the bombing of Akwal and Gujarat airfields and enemy troop concentrations in the Gujarat and Chawinda areas.

Throughout the operations, Squadron Leader Padmanabha Gautam's devotion to duty, professional skill and gallantry were in the finest traditions of the Indian Air Force.

No. 133-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Flight Lieutenant HAMIR SINGH MANGAT (5226), General Duties (Navigator).

(*Effective date of award—6th September* 1965)

During the recent operations against Pakistan, Flight Lieutenant Hamir Singh Mangat, a Navigator in an Operational Bomber Squadron, successfully navigated by day and night a number of leader and marker aircraft on hazardous offensive and tactical close support missions deep into enemy territory. Despite intense enemy fire and grave danger to his personal safety, he stuck to his post with cool courage and firm determination and accurately navigated the aircraft to their targets to carry out their vital missions.

Throughout the operations, Flight Lieutenant Hamir Singh Mangat displayed courage and devotion to duty of a high order.

2. Wing Commander BHARAT SINGH (3582), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—14th September* 1965)

On the 14th September 1965, Wing Commander Bharat Singh was the leader of a section of four Gnat Aircraft providing air cover to our Canberras engaged in a bombing mission in the Khem Karan Sector in the recent operations against Pakistan. *En route*, the formation encountered four enemy Sabre jets. During the battle that followed, Wing Commander Bharat Singh noticed the leader of the enemy formation closing in on one of our bombers with his guns firing. After warning the bomber, Wing Commander Bharat Singh engaged the Sabre jet. With superb airmanship he outmanoeuvred the enemy aircraft at every stage in the dog fight and finally shot it down. Meanwhile, the three other enemy Sabre jets had broken off the attack and fled to safety. By his daring action, Wing Commander Singh not only saved an aircraft and its crew, but also warded off a serious enemy attack on our bomber formation.

In this operation, Wing Commander Bharat Singh displayed conspicuous professional skill and gallantry in the best traditions of the Indian Air Force.

3. Flight Lieutenant PARKASH PINGALE (6755), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—16th September* 1965)

On the 16th September 1965, Flying Officer Prakash Pingale led a section of two aircraft on a "scramble" mission. His section engaged a Pakistani F-86 aircraft which was also under its own radar control. With great skill, Flying Officer Pingale manoeuvred his section behind the enemy aircraft, when he noticed another Sabre jet coming in to attack. He immediately changed his position and shot down the enemy aircraft which he had engaged earlier. Then he turned to the other enemy aircraft and flying with great skill and accuracy, engaged it and shot it down also.

The skill and leadership displayed by Flying Officer Pingale in this air combat were in the best traditions of the Indian Air Force.

4. Squadron Leader AMAR JIT SINGH SANDHU (4075), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—18th September* 1965)

Squadron Leader Amar Jit Singh Sandhu was the Flight Commander of an Operational Squadron which was assigned the task of establishing our air superiority over the Pathankot region during the recent operations against Pakistan. He flew repeated missions in the Chhamb sector and over the Pasrur and Lahore areas, all the time seeking out enemy aircraft and engagaing them. On the 18th September 1965, in a thrilling encounter against enemy aircraft, he was able to outmanoeuvre the enemy with admirable skill, courage and judgement and shot down a Sabre jet.

The courage and devotion to duty displayed by Squadron Leader Amar Jit Singh Sandhu were in the best traditions of the Indian Air Force.

5. Squadron Leader DENZIL KEELOR (4805), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—19th September* 1965)

On the 19th September 1965, Squadron Leader Denzil Keelor was providing fighter escort to Mystere aircraft during a strike mission in the operations against Pakistan. His section of four Gnat aircraft was engaged by four enemy Sabre jet aircraft and the battle was fought at a height of less than 2000 feet from the ground where enemy anti-aircraft guns were also active. Under his guidance, his sub-section leader shot down a Sabre jet aircraft. Thereafter Squadron Leader Keelor himself engaged another Sabre jet and crippled it.

Throughout the operations, Squadron Leader Denzil Keelor was a source of inspiration to his pilots and ground personnel. His courage and devotion to duty were in the best traditions of the Indian Air Force.

6. Flight Lieutenant VINOY KAPILA (5596), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—19th September* 1965)

On the 19th September 1965, as sub-section leader in a four Gnat aircraft formation, Flight Lieutenant Vinoy Kapila gave valuable assistance to his leader during an aerial battle against four Pakistani Sabre jet aircraft. The battle was fought at a height of less than 2000 feet from the ground where enemy anti-aircraft guns were active. He shot down one of the enemy aircraft and then helped his leader to cripple another.

In this action, Flight Lieutenant Kapila displayed courage and devotion to duty of a high order.

7. Flight Lieutenant AJOY KUMAR MAJUMDAR (5071), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—20th September* 1965)

On the 20th September 1965, as leader of a section of two Gnat aircraft, Flight Lieutenant Ajoy Kumar Majumdar was ordered to "scramble" along with two Hunter aircraft, for patrol duty over the Lahore sector. The section was surprised by four enemy Sabre jet aircraft. Acting with great presence of mind, Flight Lieutenant Majumdar ordered the Hunters into a defensive turn and at the same time engaged the Sabres in an attempt to ward them off. In the ensuing battle he shot down one of the enemy aircraft.

In this combat, Flight Lieutenant Ajoy Kumar Majumdar displayed great skill and initiative in the best traditions of the Indian Air Force.

The 16th October 1965

No. 127-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Lieutenant Colonel NARINDRA NATH KHANNA (IC-4018), 2nd Battalion, The Sikh Regiment. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

Lieutenant Colonel Narindra Nath Khanna was the commanding officer of a Battalion of the Sikh Regiment which captured Raja picquet, a well fortified enemy defended locality across the cease-fire line in Jammu and Kashmir. On the 6th September, 1965, when Lieutenant Colonel Khanna made an assault on this point with 3 Companies in an encircling movement, his companies came under very heavy automatic and fixed line fire from Medium Machine Guns and .50 Brownings, apart from many other light automatic weapons. Two of the assaulting companies were as a result pushed back and pinned down by the heavy fire. Though himself wounded by an enemy grenade, Lieutenant Colonel Khanna inspired the two companies with words of courage; and personally led them in another assault which succeeded in capturing the objective. Whilst leading the final assault, he was severely wounded by a burst from a .50 Browning and succumbed to his injuries later. But for Lieutenant Colonel Khanna's courage, determination and leadership, this enemy stronghold would not have been captured. His act of supreme sacrifice was in the highest traditions of the Indian Army.

2. Major BHUPINDER SINGH (IC-4466), 4th Hodson's Horse. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—11th September,* 1965)

Major Bhupinder Singh, Squadron Commander, Hodson's Horse, led his Squadron with distinction in the battle of Phillora and Sodreke in Pakistan between the 11th and the 19th September, 1965. With skilful deployment and bold action, his Squadron was able to cause large scale destruction of Pakistani tanks and other equipment. Although his tank was hit on several occasions, he continued to remain in effective command and, by several acts of personal gallantry, inspired his men to fight courageously. On the 19th September, 1965, in the battle of Sodreke his tank was hit and caught fire. While abandoning the tank, he was burnt severely and though evacuated subsequently died.

Major Bhupinder Singh displayed great determination and courage under heavy enemy fire, by continuing to fight with only two tanks after most of his tanks had been disabled. He set an inspiring example of personal sacrifice and bravery in the best traditions of the Indian Army.

3. Major ASA RAM TYAGI (IC-13056), 3rd Battalion, The Jat Regiment. (*Posthumous*).

(*Effective date of award—21st September,* 1965)

On the night of the 21st/22nd September, 1965, Major Asa Ram Tyagi personally led the leading platoon of a company of a Jat Battalion to capture an enemy position in Dogral village in Pakistan, which was defended by a troop of tanks covering pill boxes and recoilless guns. While assaulting the enemy position, Major Tyagi was hit by two bullets in the right shoulder. In spite of his injury, he pressed on to the enemy tanks, personally destroyed the crew with hand grenades and captured two tanks intact. In this process he was again hit by three more bullets, but still continued to lead his company till he fell unconscious. He was subsequently evacuated to a military hospital where he died. Greatly inspired by his conspicuous bravery, his men captured the objective.

No. 134-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Major SOMESH KAPOOR (IC-7015), 1st Bn., The Sikh Regiment.

(*Effective date of award—22nd August* 1965)

On the 22nd August 1965, Major Somesh Kapoor, Company Commander in a Battalion of the Sikh Regiment, was ordered to capture the Pakistani posts in the Poonch Sector by the 24th August 1965. Since no suitable routes for outflanking the enemy could be found, it was decided to launch a frontal attack with three platoons. On the 24th August 1965, as soon as the leading platoon had entered the first enemy post, Major Kapoor decided that he must attack the next post immediately. The terrain permitted movement in single file only. With two scouts ahead, Major Kapoor led his company past the first post. When he was at a distance of about 50 yards from the objective, the enemy opened fire with Medium and Light Machine Guns. Major Kapoor having issued necessary orders to two of his platoons, moved forward with the third Platoon through the enemy's forward position and assaulted the depth locality. The speed and momentum of the assault broke the enemy's resistance and the post was captured in 30 minutes. Eight enemy soldiers were killed, six were taken prisoner and a large quantity of arms and ammunition was captured.

Major Kapoor's leadership and devotion to duty were a source of inspiration to his men and were in the highest traditions of the Indian Army.

2. 4139233 Lance Havildar UMRAO SINGH, 1st Bn., The Parachute Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—30th August* 1965)

On the 30th August 1965, a Company of a Battalion of the Parachute Regiment was ordered to capture ring contour in the Haji Pir Pass in Jammu & Kashmir. Lance Havildar Umrao Singh was commanding a leading section of one of the assaulting platoons. At first only two enemy light machine guns opened up, but as the assaulting troops closed in on the enemy position, another light machine gun from a defiladed position opened fire and stemmed the assault. At this crucial stage, disregarding his personal safety, Lance Havildar Umrao Singh charged towards the enemy light machine gun, shouting to his men to follow him. When 20 yards from the machine gun, he threw a hand grenade and silenced it. As he did this, a Light Machine gun burst hit him in his chest and he was killed. Due to his daring and timely action in destroying the enemy machine gun, ring contour of the Haji Pir Pass was captured.

Throughout this operation, Lance Havildar Umrao Singh displayed exemplary courage and devotion to duty.

3. 5438003 Rifleman DHAN BAHADUR GURUNG, 2nd Bn., The 5th Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Rifleman Dhan Bahadur Gurung was one of the newly trained riflemen in a platoon of the Gorkha Regiment, which showed great dash in the capture of an enemy stronghold in the Sialkot Sector on the night of the 7th/8th September, 1965. Rifleman Gurung went forward with his platoon commander to the well fortified enemy position. Though wounded by a grenade splinter, he forced an opening into the enemy's strong position and killed four of the enemy soldiers at close quarters with his kukri. This enabled his platoon to wipe out this enemy stronghold.

In this action, Rifleman Dhan Bahadur Gurung displayed courage and devotion to duty of a high order.

4. Captain BHIKHAM SINGH (IC-14602), 7th Bn., The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—9th September* 1965)

Captain (then Lieutenant) Bhikham Singh was commanding a Company of a Battalion of the Punjab Regiment in the Lahore Sector. The Battalion was rushed into this Sector on the 9th September 1965, after our troops had been forced to fall back. His Company was detailed to move forward in daylight and secure a new position to halt the enemy advance. When it was found that the enemy had not been very active, the company was ordered to move forward to occupy a defensive position at Kakkar in one of the areas from where our troops had to fall back and which the enemy failed to re-occupy. Captain Singh performed this operation with great speed and skill and got the new position ready during the night despite enemy shelling. Throughout the action, Captain Bhikham Singh displayed bravery and leadership of a high order.

5. JC 32607 Naib Risaldar MOHAMMED AYYUB KHAN,

The 18th Cavalry Regiment.

(*Effective date of award—9th September* 1965)

On the 9th September 1965, Naib Risaldar Mohammed Ayyub Khan, who was commanding a troop of a Squadron of a Cavalry regiment, was ordered to block the enemy assault on the Suchet Garh positions in Sialkot Sector in Pakistan. This assault threatened to cut off the main line of communication of our force in that Sector. He moved very swiftly and manoeuvred his troop so skilfully that the enemy force consisting of one company of infantry and half a dozen tanks got disintegrated and lost four tanks.

In this action against a superior enemy tank force, Naib Risaldar Mohammed Ayyub Khan displayed commendable initiative and courage in the best traditions of the Indian Army.

6. Major SURENDAR MOHAN SHARMA (IC-10082),

8th Bn., The Jammu & Kashmir Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—13th September* 1965)

On the night of the 13th/14th September 1965, Major Surender Mohan Sharma's company, along with a troop of tanks, was established at Kalarawanda in the Sialkot Sector in Pakistan. After heavy shelling and tank fire, an enemy Infantry Battalion, supported by a Squadron of tanks and artillery, attacked our Company positions. Despite heavy odds, Major Sharma inspired his men to continue the fight. He kept directing the battle from one platoon locality to the other under intense enemy fire, till he was mortally wounded. Although the enemy force had overwhelming numerical superiority and fire power, our company inflicted very heavy casualties on it. The courage, determination and leadership displayed by Major Surender Mohan Sharma were in the highest traditions of the Indian Army.

7. 5032131 Naik DEBI BAHADUR GURUNG,

2nd Bn., The 1st Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—14th September* 1965)

At 1830 hours on the 14th September 1965, when an enemy force attacked a company group of a Battalion of the Gorkha Rifles at Rasulpur in the Sialkot Sector, Naik Debi Bahadur Gurung, who was controlling the 3-inch mortars at the post, inflicted steady and accurate fire on the advancing enemy and broke up the attack. The enemy made a second attempt to capture the position and again Naik Debi Bahadur Gurung went into action with his mortars. Soon he ran out of mortar ammunition and then taking his sten gun, joined the ranks of the rifle company and kept on firing at the assaulting enemy until he fell at his post. The enemy withdrew, having suffered heavy casualties.

The courage, sacrifice and devotion to duty displayed by Naik Debi Bahadur Gurung were of a very high order in keeping with the best traditions of the Indian Army.

8. Major SARVJIT SINGH RATRA (IC-6725),

The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—15th September* 1965)

Major Sarvjit Singh Ratra performed the duties of Air Observation Post in the Lahore Sector from the 15th to the 23rd September 1965. In order to gain vital information and direct accurate fire on Pakistani tank concentrations, bridges and crossing sites over the Ichhogil Canal, he had to undertake a number of flights over enemy picquets. With great courage, he carried out these extremely dangerous missions in an unarmed aircraft. Based on his information, our aircraft destroyed an important enemy bridge and thus cut off the enemy's armour exit route. He was responsible for the destruction of five enemy tanks and several vehicles. On numerous occasions, while flying low, he was fired upon by enemy Medium Machine Guns. On the 17th September 1965, he was attacked by three enemy F-86 fighters but kept his composure and came back safely. His daring performance and willingness to face grave risks were a shining example to all his men.

9. Second Lieutenant RAVINDER SINGH BEDI (IC-14376),

The Scinde Horse.

(*Effective date of award—17th September* 1965)

On the 17th September 1965, 2/Lt. Ravinder Singh Bedi was ordered to move with his troops through the built-up area of village Jhuggian in the Lahore Sector in Pakistan and engage enemy bunkers, recoilless guns and tanks in Dograi. His troops were able to destroy a number of enemy vehicles from a position west of Jhuggian, which was within the enemy fire range. Though his tank was hit by fire from a recoilless gun and he was seriously wounded, 2nd Lieutenant Bedi continued to lead his troops and ultimately succeeded in knocking out the enemy's recoilless gun. He did not abandon his tank until it was on fire and the ammunition started exploding. When eventually he had to come out of his tank under heavy enemy shelling, though wounded, he helped his men out and led them to safety.

The leadership and courage displayed by 2nd Lieutenant Ravinder Singh Bedi were a source of inspiration to his men and were in the highest traditions of the Indian Army.

10. Major MOHAMMED AHMED ZAKI (IC-7613),

19th Bn., The Maratha Regiment.

(*Effective date of award—20th September* 1965)

Major Mohammed Ahmed Zaki was in command of the leading assaulting company of his battalion near Thatti Jaimal Singh in the Lahore sector. On the 20th September 1965, his company came under heavy and intricate enemy Medium Machine Gun, Rifle and Browning fire from the front and right flanks, and he was injured in the shoulder and arm by a burst of Medium Machine Gun fire. Assessing the seriousness of the situation, he quickly organised a determined assault on the enemy force entrenched to his right and also on the force in front of him. While doing so, he was wounded again. Undaunted by his successive injuries, he led the assault on the enemy positions in what was almost hand-to-hand fighting. With a hand grenade he himself destroyed an enemy bunker containing a Medium Machine Gun. At this stage he fell exhausted due to profuse bleeding, but inspired by his determined efforts, his company annihilated the enemy force and captured the objective.

In this battle, Major Mohammed Ahmed Zaki showed inspiring leadership, courage and dedication to duty, in the higest traditions of the Indian Army.

The 10th November 1965

No. 123-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", CLASS I, to the undermentioned personnel for distinguished service of the most exceptional order :—

Major General JOGINDER SINGH (IC-203).

Group Captain GEORGE KANISHT KUMAR JOHN (2132).

Group Captain WALTER VERNON ALEXANDER LLOYD (2623).

The 11th November 1965

No. 128-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the BAR to the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

Major General RAJINDER SINGH (IC-144), M.V.C.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

During the period from the 6th to the 22nd September, 1965, in the recent operations against Pakistan, Major General Rajinder Singh led his formation into battle against numerically superior and better equipped enemy armoured forces in the Sialkot sector. Inspired by his tactical ability and leadership, his troops inflicted heavy tank casualties on the enemy armoured forces. By his presence in the thick of the battle in utter disregard of his personal safety, Major General Rajinder Singh inspired our tank crews to engage the enemy forces closely. He commanded the highly complex armoured formation in an outstanding manner and established such moral ascendency over the enemy that in the later stages of the campaign the enemy tanks avoided battle and had to be sought out to be destroyed.

Throughout these operations, Major General Rajinder Singh displayed conspicuous bravery and leadership of a very high order in the best traditions of the Indian Army.

No. 129-*Pres./65.*—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Major General SWARUP SINGH KALAAN (IC-219), M.C.

(*Effective date of award—5th August,* 1965)

During the period from the 5th August to the 22nd September, 1965, Major General Swarup Singh Kalaan was in command of our troops in the Uri-Baramula Gulmarg sectors. The first report of infiltration by Pakistani armed personnel was received in his area. Major General Kalaan planned and executed operations for hunting out the infiltrators and capturing their bases and routes of infiltration in the entire territory east of the Kishan Ganga. For the capture of Haji Pir Pass and the subsequent link-up towards Poonch, he personally led his troops against well-entrenched regular Pakistan Army posts which had been strengthened by the enemy for the last 18 years. Inspired by his leadership and courage in the face of enemy fire, the troops under his command threw the enemy forces out of their well-defended positions.

Throughout the operations, Major General Swarup Singh Kalaan displayed conspicuous courage and exemplary leadership in the best traditions of the Indian Army.

2. Brigadier RAM DHARAM DASS HIRA (IC-2531).

(*Effective date of award—5th August,* 1965)

Brigadier Ram Dharam Dass Hira, Commander of an Infantry Brigade, was continuously engaged in active operations since the 5th August, 1965. He moved his Brigade at

short notice to deal with Pakistani infiltration in the Kashmir valley. With initiative, energy and resourcefulness, he kept the infiltrators on the run and inflicted serious losses on them.

On the commencement of hostilities with Pakistan on the Punjab border, the Brigade was assigned the task of cutting off Sialkot from the north. This involved movement by night through un-reconnoitered enemy territory and taking up a defensive position so that during the day it could hold against enemy counter-attacks. Brigadier Hira carried out this task with complete success. By his presence among his troops when they were under attack, he inspired them not only to hold their position but also to inflict serious losses on the enemy.

In these operations, Brigadier Ram Dharam Dass Hira displayed exemplary leadership, courage and resourcefulness, in the best traditions of the Indian Army.

3. Major General HAR KRISHEN SIBAL (IC-254).

(*Effective date of award—6th September*, 1965)

From the 6th till the 22nd September, 1965, Major General Har Krishen Sibal, General Officer Commanding of an Infantry Division, was in charge of troops operating against Pakistan along the Khalra axis. Their task was to advance into Pakistan up to the Ichhogil Canal and to inflict maximum attrition on the enemy. Under the command of Major General Har Krishen Sibal the troops carried out this task successfully and in the process launched two major offensive actions, including the crossing of the Hudiara drain. Before closing up to the east bank of the Canal, they cleared the fortified village of Burki, after fighting from house to house and assaulting concrete emplacements sited along the East bank of the Ichhogil Canal. Repeated counter-attacks by the enemy were repulsed and our own attacks pressed home until the East bank of the Canal was cleared of the enemy.

These operations were conducted personally by Major General Har Krishen Sibal who remained close to the front lines in utter disregard of his personal safety. By his presence among his troops he continued to inspire them to better effort and contributed materially towards the success achieved by our forces in the closely fought engagements.

The courage, leadership and devotion to duty displayed by Major General Sibal were in the best traditions of the Indian Army.

4. Major General GURBAKSH SINGH (IC-324).

(*Effective date of award—6th September*, 1965)

From the 6th till the 22nd September, 1965, Major General Gurbaksh Singh, General Officer Commanding of a Mountain Division, was responsible for operations against Pakistan in the Khem Karan sector. Though short of troops, his formation captured their initial objectives on the first day. They held on to these positions until they were forced to fall back due to adverse circumstances and attacks by an overwhelmingly superior enemy armoured force. This temporary withdrawal to better tactical positions was carried out with a view to taking full toll of any enemy attack. An attack was launched by three enemy armoured groups followed by an infantry division. Although the enemy force was numerically superior, the troops under the command of Major General Gurbaksh Singh not only held their position, but by the end of the first day's operations practically decimated one and a half enemy tank regiments. Early next morning the remnants of this attacking tank force were forced to surrender to our troops.

During these operaions, Major General Gurbaksh Singh kept moving amongst his men at all times, facing the same dangers as they did and directing the battle from the ground. By personal example he inspired his troops to face the overwhelming odds successfully and to inflict heavy losses on a well-equipped enemy force. He displayed exemplary leadership, remarkable tenacity and indomitable courage.

5. Brigadier KHEM KARAN SINGH (IC-2014).

(*Effective date of award—6th September*, 1965)

Brigadier Khem Karan Singh, Commander of an Armoured Brigade, led his Brigade into action during the operations in the Sialkot sector from the 6th to the 22nd September 1965. In addition to his own integral armour, Brigadier Singh was given command of additional armoured units in order to cope with enemy tanks which were superior in numbers and better in technical performance.

During the first three days of battle, the force under the command of Brigadier Singh destroyed over 75 enemy tanks at the cost of a small number of our own tanks. This was possible due to Brigadier Singh's personal example as he, in his own tank, was present at the point of maximum enemy threat.

Brigadier Singh fought the battle of Phillora for three days and nights. Finally, because of his superior leadership, better tactical and technical performance and the firm determination of our troops, the enemy force was defeated and thrown out of this important communication centre.

The task assigned to his formation in the initial stages was to destroy as much enemy equipment as possible; it was performed so well that the enemy had to move up all his reserves in order to hold the line. A few days before the cease-fire, the enemy tank commanders were so demoralised that they avoided close combat and engaged our forces only at extreme range.

Brigadier Khem Karan Singh displayed outstanding leadership, high tactical ability and great devotion to duty, in the best traditions of the Indian Army.

The 20th December 1965

No. 135-Pres./65.—The President is pleased to approve the award of the ASHOK CHAKRA, CLASS I, for most conspicuous bravery and self-sacrifice to :—

Shri CHAMAN LAL,

Fireman, Northern Railway (*Posthumous*).

(*Effective date of award—13th September* 1965).

On 13th September 1965, a goods train at Gurdaspur Station on Amritsar-Pathankot section of Northern Railway was subjected to heavy strafing by Pakistani planes, as a result of which 3 tank wagons carrying diesel oil caught fire and one of them exploded. Shri Chaman Lal, Fireman of the train, noticing the fire and foreseeing impending disaster, immediately rushed to the spot, and with complete disregard for his personal safety, uncoupled the tank wagons affected by the fire. Hardly had he completed this dangerous operation when he was enveloped by the flames of the burning tank and was burnt to death. As a result of his courageous action in which he sacrificed his life, the other wagons of the train could be removed to safety.

By his exemplary courage, foresight, initiative and complete disregard of his personal safety, Shri Chaman Lal not only prevented the destruction of the remaining wagons and valuable stores, but also saved the lives of many persons present at the Railway Station.

His supreme self-sacrifice will remain a shinning example of valour and selfless devotion to duty.

Y. D. GUNDEVIA, Secy. to the President.

MINISTRY OF FINANCE

RESOLUTION

New Delhi, the 18th December 1965

No. F. 3(14)NS/65.—The Post Office Savings Bank is an important instrument for raising resources for the Public Sector. A Government Savings Bank detached from the Post Offices is, however, likely to be able to function more purposefully in achieving the object of raising resources and offering facilities and services to its clientele. The Bank could besides handling Savings Bank work also undertake the Savings Certificates work which is at present done by the Post Offices. Recognising the need for the reconstitution of the Post Office Savings Bank into a separate Government Savings Bank working under the Government Savings Bank Act and under the Finance Ministry, which would continue to utilise the agency of Post Offices in rural and semi-urban areas, the Government of India hereby constitute a Committee to make a comprehensive study of the problems involved in such a reconstitution. The Committee will in particular examine and make recommendations to Government on the following matters :—

(i) The organisational set-up necessary for the Government Savings Bank.

(ii) The absorption into the Government Savings Bank of the existing staff in the Post Offices employed on the Savings Bank work and/or the appointment of additional staff and their training in banking methods.

(iii) Arrangements in regard to the accommodation for the new Organisation.

(iv) Arrangements for utilising the agency of Post Offices in rural and semi-urban areas including the question of the remuneration payable for undertaking the work.

(v) Procedure for taking over Savings Bank and Savings Certificates work from the Post Offices.

(vi) Maintenance of liaison with the National Savings Organisation.

The Committee will also draw up a scheme for giving effect to their recommendations.

2. The Committee will consist of the following members :—

(i) Shri B. D. Pande, Chairman, Life Insurance Corporation and Chairman, Savings Mobilisation Board.

(ii) Shri N. V. Navudu, National Savings Commissioner, Government of India.

(iii) Shri S. C. Jain, Member (Banking & Insurance), P. & T. Board.

(iv) Shri L. G. Kale, presently Staff Officer, Planning Department, State Bank of India, Bombay.

Sarvashri B. D. Pande, N. V. Navudu and S. C. Jain will render part-time service to the Committee while Shri L. G. Kale will render whole-time service. Shri B. D. Pande will be the Chairman of the Committee and Shri L. G. Kale will also act as Secretary to the Committee.

3. The headquarters of the Committee will be in Bombay.

4. The Committee will report to the Government of India within a period of three months from the time it is set up.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

A. R. SHIRALI, Jt. Secy.

MINISTRY OF FOOD AND AGRICULTURE

(Department of Agriculture)

RESOLUTIONS

New Delhi, the 10th December 1965

No. 2-4/65-APB.—The Government of India have recently reviewed the working of the Agricultural Production Board set up vide Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture) Resolution No. 13-2/64-Est.I dated the 28th January 1964, and have decided to enlarge its composition and powers to enable it to function more effectively. The Board will now be composed as follows :—

Chairman

(i) Minister of Food and Agriculture.

Members

(ii) Minister of Community Development & Cooperation.

(iii) Minister of Irrigation & Power.

(iv) Minister of Planning.

(v) Minister of State in the Ministry of Finance.

(vi) Member for Agriculture, Planning Commission.

The Chairman of the Board will have powers to co-opt any other Minister as a member of the Board when matters concerning his Ministry are coming up before the Board at any of its meetings.

The Special Secretary to the Government of India in the Department of Agriculture will be the Secretary of the Board.

Other Ministers, Secretaries or officials of the Government of India or the State Governments may also be invited to attend its meetings whenever it is considered necessary.

The Board will be assisted by a Committee of Secretaries consisting of Secretaries and Additional Secretaries in the Ministries of Food and Agriculture, Community Development and Co-operation, Irrigation and Power, Finance, Departments of Co-ordination and Expenditure and in the Planning Commission.

Functions and Powers

The functions and powers of the Board will be as follows :—

(i) To secure effective and continuous co-ordination between the concerned Ministries and Departments at the Centre and between the Centre and the States, in matters relating to the formulation and execution of development programmes.

(ii) To review the progress of development programmes, ensure efficient arrangements for supplies and services, locate difficulties, if any, and endeavour to remove them.

(iii) To take such other measures as would ensure speedy and effective implementation of the development programmes at the Centre and in the States.

(iv) The decisions of the Board will be treated as the decisions of the Government of India as long as they are within the Plan provisions and within the framework of the approved budget provisions of the Ministries concerned.

Rules and Procedures

The Board will meet as often as necessary, generally once a month.

In order to enable the Board to arrive at final decisions on the various points, the views of the concerned Departments/Ministries shall be obtained before hand by the Departments/Ministries sponsoring the items for consideration and incorporated in the notes for consideration by the Board.

The cases coming up before the Board will first be screened by the Committee of Secretaries referred to above.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the Ministries/Departments of the Government of India, all the State Governments and Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, President's Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, all members of the Agricultural Production Board, Directors of Agriculture and Animal Husbandry in all the States/Union Territories and all Attached and Subordinate offices under the Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

No. 2-4/65-APB.—With a view to dealing with concrete problems of purposive cooperative development in a co-ordinated manner, the Government of India have decided to set up a Special Committee on Cooperation related to Agriculture. The composition of the Committee will be as follows :—

Chairman

1. Minister of Food and Agriculture.

Members

2. Minister of Community Development & Cooperation.
3. Minister of State in the Ministry of Finance.
4. Member, Planning Commission, in charge of Co-operation.
5. Deputy Governor, Reserve Bank of India.

The Deputy Minister of Irrigation will be invited as a special invitee to the meetings of the Committee.

The Secretary of the Agricultural Production Board in the Ministry of Food & Agriculture will function as Secretary of the Committee.

Any other Ministers, Secretaries or other officials of the Central or State Governments may be invited to the meetings of the Committee as and when it is considered necessary.

The Committee will be assisted by a Committee of Secretaries consisting of the Secretaries to the Government of India in the Ministry of Food & Agriculture, Department of Co-operation of the Ministry of Community Development & Co-operation, Departments of Expenditure and Co-ordination of the Ministry of Finance, Secretary to the Planning Commission, the Deputy Governor of the Reserve Bank of India, the Director General, Intensive Agricultural Areas, and the Secretary of the Agricultural Production Board. The Secretaries of other Ministries or Departments of the Government of India may be invited to the meetings of the Committee as and when it is considered necessary.

The proceedings of the Committee would be circulated to all the members of the Agricultural Production Board.

The Special Committee would generally meet once a month and all items coming up before it will first be screened by the Committee of Secretaries referred to above.

In order to enable the Special Committee to arrive at final decisions on the various points, the views of the concerned Departments/Ministries will be obtained before hand by the Departments/Ministries sponsoring the proposals and these will be incorporated in the notes for consideration by the Special Committee.

This is in supersession of the Ministry of Food and Agriculture Order No. 13-2/64-Est.I dated the 7th May 1965.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all the Ministries/Departments of the Government of India, all the State Governments and Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, President's Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, all members of the Agricultural Production Board/Special Committee on Cooperation related to Agriculture and all Attached and Subordinate offices under the Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. K. DATTA, Special Secy.

(I.C.A.R.)

RESOLUTION

New Delhi-1, the 17th December 1965

No. 6-7/65-Reorgn.(CC).—The Second Joint Indo-American Team, appointed in 1959, to review the position of Agricultural Education, Research and Extension in India, recommended that in the interest of consolidating the Central Agricultural Research Programme and assuring adequate co-ordination, all Central Institutes and Commodity Committees should be brought under the full technical and administrative control of the Indian Council of Agricultural Research. This recommendation was strongly supported by the Agricultural Research Review Team, appointed in 1963. The Government of India have examined the above recommendations in the light of the actual functioning of the Central Commodity Committees during the past years and recently decided that the Commodity Committees should be abolished and the research work being conducted by them be integrated with the Indian Council of Agricultural Research, which should be suitably reorganised and strengthened, so as to enable it to develop and administer a National Programme of Agricultural Research, commensurate with the needs of the country.

Accordingly, the Indian Central Jute Committee was dissolved on 30th September 1965 and its research activities (including the administrative control of the jute research institutes and stations) have been assumed by the Indian Council of Agricultural Research, with effect from 1st October 1965.

2. The Government of India have taken over the development and marketing functions handled by the Committee. In order to continue the association of the various official and non-official interests with the development of jute and have the benefit of their continued advice, the Government of India have decided to constitute an Indian Jute Development Council. To begin with, the Council will consist of the following :—

Chairman

1. Shri Dinesh Kumar Singh, M.L.C., Kursela Estate, P.O. Ajodhyaganj Bazar, Purnea (Bihar).

Vice-Chairman

2. The Secretary to the Government of India in the Department of Agriculture.

Members

3. (a) *Representatives of the Central and State Governments* :

(1) One representative each of the State Department of Agriculture to be nominated by the Governments of—

(i) West Bengal.
(ii) Assam.
(iii) Bihar.
(iv) Orissa; and
(v) Chief Secretary, Tripura Administration.

(2) One representative of the Planning Commission.

(3) Agricultural Commissioner with the Government of India.

(4) Jute Commissioner, Ministry of Commerce.

(b) *Growers representatives* :

(1) Shri Basudeo Prasad Sinha, M.L.A., Village Jhiktia, P.O. Gurubazar, District Purnea (Bihar) (Flat No. 70, Gardinur Road, Patna).

(2) Shri Yogeshwar Jha, Old Dak Banglow Road, Murliganj, Saharsa (Bihar) (Bihar Provincial Congress Committee, Sadaquat Ashram, Patna).

(3) Shri Raghunath Mishra, Secretary, Danapur Jute Growers' Cooperative Society, P.O. Danapur, District Cuttack (Orissa).

(4) Shri Khalilur Rahaman, P.O. Nischiatakoily, Cuttack (Orissa).

(5) Shri Rabindra Nath Sen Gupta, B.Ag., Village Komdebkathi, P.O. Kalsur, 24-Parganas, West Bengal.

(6) Shri Satyendra Nath Chowdhury, B.A., B.T., P.O. Karimpore, District Nadia, West Bengal.

(7) Shri Mohammad Israel, M.L.A., Village Barua, P.O. Beldanga, District Murshidabad, West Bengal.

(8) Shri Subodh Chandra Mukherjee, B.Sc., Village Bergoon, P.O. Gobardanga, District 24-Parganas, West Bengal.

(9) Shri L. Laxmanadoss, B.Com., M.L.A., Pathapatnam, District Srikakulam, Andhra Pradesh.

(10) Shri Mahadev Das, M.L.A., P.O. Barpeta, District Kamrup, Assam.

(11) Shri Md. Umaruudin, B.A., M.L.A., Bilashipara, P.O. Dhubri, District Goalpara, Assam.

(12) Shri Md. Idris, M.L.A., P.O. Nowgong, Assam.

(c) *Representatives of Trade and Industry* :

(1) Dr. B. P. Kedia, M/s Anderson Wright Ltd., 7, Wellesley Place, Calcutta.

(2) Shri C. L. Bajoria, M/s Mcleod & Co., Mcleod House, 3, Netaji Subhash Road, Calcutta-1.

(3) Shri A. P. Jain, M/s Sahu Jain Ltd., 11, Clive Row, Calcutta.

(4) Shri R. P. Goenka, M/s Duncan Bros. Ltd., 31, Netaji Subhas Road, Calcutta-1.

(5) Shri N. K. Jalan, M/s Soorajmull Nagarmull, 8, Dalhousie Square East, Calcutta-1.

(6) Shri Champalal Baid, M/s Hamirmull Champalal, 2, Raja Woodmunt Street, Calcutta.

(d) *Others* :

(1) Shri Satish Chandra Samanta, M.P., P.O. Tamluk, District Midnapur, West Bengal. (7, Dupleix Lane, New Delhi).

(2) Shri Phani Gopal Sen, M.P., Mohalla-Bhatta, P.O. & District Purnea, Bihar. (40, North Avenue, New Delhi).

(3) Shri P. C. Mitra, M.P., Sarada Babu Street, Ranchi (Bihar). (117, North Avenue, New Delhi).

(4) Shri Anirudha Sinha, Station Road, P.O. Laheria Sarai, Darbhanga, Bihar.

(5) The Registrar of Cooperative Societies, 8, 8, Lyons Range, Calcutta.

(e) Such additional persons as may, from time to time, be nominated by the Government of India, to represent interests not already represented in the Council.

Member-Secretary

4. Deputy Secretary or any other Officer dealing with the crop in the Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture).

Observers

5. (Who would not be members of the Council but would be invariably invited to assist the Council in its deliberations).

(1) Agricultural Marketing Adviser, Ministry of Food and Agriculture.

(2) Joint Secretary (Finance) accredited to the Ministry of Food and Agriculture.

(3) Economic & Statistical Adviser, Ministry of Food and Agriculture.

(4) Chairman, State Trading Corporation.

(5) A representative of Railways.

(6) A representative of the National Agricultural Cooperative Marketing Federation.

(7) Director, Jute Agricultural Research Institute, Barrackpore.

(8) Director, Technological Research Laboratories, Tollygunge.

(9) Special Officer (Jute), Indian Council of Agricultural Research.

3. The Council will be an advisory body and will have the following functions :—

(i) to consider, from time to time, the development programmes formulated by the Central and State Governments in respect of jute and allied fibres;

(ii) to consider and review the progress of jute development in the context of targets laid down;

(iii) to recommend measures for accelerating the tempo of development programmes/schemes, wherever necessary;

(iv) to suggest special schemes for improving the quality of jute and allied fibres and to scrutinise the progress of schemes sanctioned therefor;

(v) to make an appraisal of the prevailing prices for jute and other allied fibres in producing centres and to recommend measures for stabilisation of prices;

(vi) to take stock of the movement of jute and allied fibres from the producing to marketing centres and to make suggestions for removal of bottlenecks, if any, in this regard; and

(vii) any other function, which may from time to time, be assigned by the Government of India to the Council.

4. The Council will meet periodically in important centres of trade and industry, in areas in which jute is grown and will make its recommendations to the Government of India.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, Administrations of Union Territories and Ministries of the Government of India, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Lok Sabha Secretariat and Rajya Sabha Secretariat.

2. ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. SIVARAMAN, Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 18th December 1965

No. F. 16-6/65-*P.E.4*.—In continuation of this Ministry's Gazette Notification of even number dated the 17th August, 1965 regarding nomination of the founder members of the Society for the Administration of the Central Institutes in the field of Physical Education and Sports the following three members are further nominated on the Board of Governors for the administration of the said Society :—

1. Raja Bhalindra Singh,
President,
Indian Olympic Association,
99-C, Rajpur Road,
Dehra Dun (U.P.).

2. Major General Jagjit Singh Aurora, President, Services Sports Control Board, New Delhi.
3. Shri G. P. Bhalla, President, Railway Sports Control Board, Eastern Railway House, Calcutta. } *Ex-officio*

R. L. ANAND, Under Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION AND POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 22nd December 1965

No. DW.V.516(4)/64.—The question of providing adequate waterways for the bridges on the National Highways under the Ministry of Transport (Roads Wing) from the flood control point of view and the liability for the expenditure thereon has been engaging the attention of Government for some time past. It is generally agreed that if the additional water-way is necessitated due to natural causes, the Ministry of Transport (Roads Wing) would bear the cost of the widening; but if it is necessitated due to some works undertaken by the State Government, then the cost should be borne by the State authorities. Cases may, however, occur where there may be difference of opinion between the State Government and the Ministry of Transport (Roads Wing) as to the causes necessitating the widening of waterways and the incidence of the cost thereof. In order to settle such disputes, it has been decided to constitute a Standing Committee.

2. The Committee shall consist of :—

Chairman

(i) Chairman, CW&PC.

Members

(ii) Additional Consulting Engineer (Bridges) Ministry of Transport (Roads Wing).

(iii) Chief Engineer of the State Governments in charge of flood control.

Member-Secretary

(iv) A representative of the CW&PC.

3. The terms of reference of the Standing Committee shall be as follows :—

The Committee will go into cases where there is a dispute between the State Government and the Ministry of Transport (Roads Wing) concerning the causes that have necessitated the provision of increased waterways (*viz.* modification of existing bridges or building new bridges) under national highways. The Committee will examine the details and decide in the case of each bridge whether the increased waterway has become necessary due to any-one or combination of the following causes :—

(a) natural causes like increase in the intensity of rainfall, natural changes in the course of streams, etc.;

(b) change in the pattern of distribution of the runoff from a catchment area causing an increase in peak discharge through the concerned National Highway bridge(s) due to flood control, drainage irrigation and road schemes or other works undertaken by the State Government;

(c) original inadequacy of the bridge at the time of construction; and

(d) any other causes.

If the increased provision is necessitated due to a combination of more than one of the above causes, the Committee will also assess the proportion of the total increase in waterway attributable to each of these causes.

4. Whenever a difference of view arises between the State Government and the Ministry of Transport (Roads Wing) the State Chief Engineer concerned or the Ministry of Transport (Roads Wing) will submit a memorandum on the State's or Ministry of Transport's case to the Chairman, C W. & P.C. with a copy to the Ministry of Transport (Roads Wing) or to the State concerned. The Chairman, CW&PC would then fix up a meeting to consider the matter. The decision of the Committee will be binding on the Ministry of Transport (Roads Wing) as well as on the State Government.

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to all State Governments, Ministry of Transport (Roads Wing), Prime Minister's Secretariat, the Private and Military Secretaries to the President, Department of Parliamentary Affairs, the Rajya/Lok Sabha Secretariat, the Planning Commission and the Comptroller and Auditor General of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India and that the State Governments be requested to publish it in the State Gazettes for general information.

P. R. AHUJA, Jt. Secy.

MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING

RESOLUTION

New Delhi, the 6th December 1965

No. 47/29/65-FP.—The following further amendments are hereby made to the Preamble and the Rules governing the working of the Film Advisory Board contained in Resolution of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No. 1/29/58-FP, dated the 5th February 1959 :—

For the existing Preamble, substitute

"In supersession of the Resolution of the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting No. 1/51/64-F, dated the 2nd February 1955, the following rules are notified in regard to the working of the Film Advisory Board at Bombay and the approval of films as scientific films, films intended for educational purposes, films dealing with news and current events, documentary films or indigenous films in accordance with the directions issued by the Central Government under sub-section (4) of section 12 of the Cinematograph Act, 1952 (37 of 1952) and by the various State Governments under the corresponding State Laws. These rules shall come into force with effect from Monday, the 16th February 1959."

For the existing Rule 1, substitute

"The function of the Film Advisory Board shall be to make recommendations to the Central Government regarding the suitability of films for approval as scientific films, films intended for educational purposes, films dealing with news and current events, documentary films or indigenous films in accordance with the directions issued by the Central Government under sub-section (4) of section 12 of the Cinematograph Act, 1952 (37 of 1952) and by the State Governments under the corresponding State Laws."

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to :—

(1) The Chairman, Film Advisory Board, 91, Walkeshwar Road, Bombay-6.

(2) The Secretary, Film Advisory Board, 91-Walkeshwar Road, Bombay-6 (with 10 spare copies—A copy each may be given to all Members of the Film Advisory Board).

(3) The Controller of the Films Division, 24-Peddar Road, Bombay-26.

(4) Chief Secretaries of all State Governments etc.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

D. R. KHANNA, Under Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1966